TISRI QASAM

(THE THIRD VOW)

तीसरी क़सम

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर

आधारित फ़िल्म

पटकथा: नाबेन्दु घोष

निर्देशन: बासु भट्टाचार्य

बम्बई १९६६

पात्र

हीरामन:	गाड़ीवान
हीराबाई:	नौटंकी कम्पनी की नर्तकी
पलटदास:	गाड़ीवान, हीरामन का साथी
लालमोहर:	गाड़ीवान, हीरामन का साथी
धुन्नीराम:	गाड़ीवान, हीरामन का साथी
लहसन्वा:	लालमोहर का नौकर, बाद में नौटंकी कम्पनी का नौकर
बिरजू:	हीराबाई का मैनेजर
विक्रमसिंह:	उस इलाक़े के एक ज़मीनदार

शहर और नौटंकी के लोग

00 संगीत । बैलगाड़ी, ट्रेन और चिड़िया की आवाज़ । १
जगह: तराई का कोई गांव ।

एक आदमी: मुनीम जी, सब गाड़ीवानों को बता दूं ? २

मुनीम: क्या बात करते हैं आप । बीसों कान बात जाएगी, ३
बात फैल जाएगी ।

एक आदमी: लेकिन कुछ हो गया तो ? सब गाड़ीवालों की ४
बड़ी मुसीबत ...

मुनीम: घबराने की कोई बात नहीं । मैं तो साथ हूं । ५
रातोंरात पार हो जाएंगे ।

एक आदमी: अच्छा, अच्छा । ६

00 बैलगाड़ियों की आवाज़ । ७

गाना: सजन रे झूठ मत बोलो, ख़ुदा के पास जाना है । ८
न हाथी है न घोड़ा है, वहां पैदल ही जाना है ।
सजन रे झूठ मत बोलो, ख़ुदा के पास जाना है ।
न हाथी है न घोड़ा है, वहां पैदल ही जाना है ।

तुम्हारे महल चौबारे, यहीं रह जाएंगे सारे । ९
तुम्हारे महल चौबारे, यहीं रह जाएंगे सारे ।

अकड़ किस बात की प्यारे, अकड़ किस बात की प्यारे,
यह सर फिर भी झुकाना है ।

सजन रे झूठ मत बोलो, ख़ुदा के पास जाना है । १०
भला कीजे भला होगा, बुरा कीजे बुरा होगा ।
बही लिख लिख के क्या होगा, बही लिख लिख के क्या होगा,
यहीं सब कुछ चुकाना है ।

सजन रे झूठ मत बोलो, ख़ुदा के पास जाना है । ११
लड़कपन खेल में खोया, जवानी नींद भर सोया ।
लड़कपन खेल में खोया, जवानी नींद भर सोया ।
बुढ़ापा देखकर रोया, बुढ़ापा देखकर रोया ।
वो ही क़िस्सा पुराना है ।

सजन रे झूठ मत बोलो, ख़ुदा के पास जाना है । १२
न हाथी है न घोड़ा है, वहां पैदल ही जाना है ।
सजन रे झूठ मत बोलो, ख़ुदा के पास जाना है ।

00 बैलगाड़ी की आवाज़ । १३

दारोगा: अरे मतुआ, रोक । पकड़ इसे । हुक्म सिंह, घेर लो १४
इन सब को ।

मुनीम: हे भगवान ! १५

दारोगा: पकड़ा इस बार, इस कंस को । क्यों मुनीम जी । १६

मुनीम: हैं...हैं...हैं..दरोगा साहब, दरोगा साहब। १७

दारोग़ा: नीचे उतार। नीचे उतार। नीचे उतार। १८
उतार नीचे, नीचे उतार।

मुनीम: ०० गिड़गिड़ाते हैं ०० दरोगा साहब, दरोगा साहब। १९

हिरामन: अरे मैंने तो पहले ही कहा था, यह पीस पिसावेगा। २०

दारोग़ा: क्यों फुसफुस कर रहा है? बदमाश कहीं का, फिर २१
ब्लैक मार्केट चालू कर दिया। इस बार तुझे दस साल की
हवा खिलाऊंगा। और इन साले गाड़ीवानों को दो दो
साल।

मुनीम: ओ ओ माई - बाप, अब माफ़ कर दीजिये। मेरा २२
कोई भी नहीं है। आप सहारा हैं, सब कुछ हैं।
आ ... मैं आपके पांव छूता हूं। मेरा कोई भी नहीं
है। माई-बाप आप पैसे ले लीजिये। आप सारा माल
रख लीजिये।

दारोग़ा: चुप। २३

मुनीम: एक बार छोड़ दीजिये, एक बार। फिर नहीं करूंगा। २४
कभी नहीं करूंगा। बहुत हो चुका है।

दारोग़ा: बदमाश कहीं का। २५

मुनीम: ओ ओ माई-बाप, अपने छोटे, छोटे बच्चे हैं। आप २६
मुझे . . . तीन हज़ार।

दारोग़ा: तीन हज़ार! ठीक बेइमानी करता है, फिर रिश्वत २७
देता है।

मुनीम: मेरे माई - बाप, बच्चा हूं, नौकर हूं, दास हूं, २८
रैय्यत हूं। मुझे माफ़ कर दीजिये। हुज़ूर, हुज़ूर
फिर नहीं करूंगा, मैं।

दारोग़ा: चुप। २९

मुनीम: फिर नहीं करूंगा। ३०

दारोग़ा: चुप। ३१

सिपाही: भागा, भागा। ३२

दारोग़ा: पकड़ो इन सबको। जाने न पायें। चलाओ गोली। ३३

०० गोलियों की आवाज़। ३४
बैलगाड़ी की आवाज़।
हिरामन बैलों को दौड़ाते हुए जंगल के रास्ते अपने गांव
पहुंचता है। भौजी घर के आगे झाड़ू दे रही है।

हिरामन: कभी नहीं करूंगा । ३५

भौजी: क्या किया है तुमने? अरे तुम बोलते क्यों नहीं? ३६
तेरी गाड़ी कहां है?

हिरामन: गाड़ी? गाड़ी नहीं है, भौजी । ३७

भौजी: गाड़ी नहीं है? क्या हुआ तेरी गाड़ी? ३८

हिरामन: कान पकड़ता हूं । कान पकड़ता हूं । ३९

भौजी: अरे कुछ बोलेगा भी या कान ही पकड़े रहेगा । ४०

हिरामन: क़सम खाता हूं भौजी । फिर कभी चोर बाज़ारी ४१
का माल नहीं लादूंगा ।

भौजी: चोर बाज़ारी का माल? ४२

हिरामन: हां भौजी, चोर बाज़ारी का माल लादकर जा रहा था । ४३
पुलिस ने गाड़ी धर ली । हं ०० लंबी सांस लेकर ००
किसी तरह बैलों को बचाकर भाग निकला, नहीं तो दो
तीन बरस जेल की चक्की ।

भौजी: दुहाई काली मैय्या की। ख़बरदार, जो फिर कभी तूने ऐसा ४४
किया तो ।

हिरामन: राम, राम, राम । ४५

०० गांव के दृश्य के आगे क्रेडिट्स आते हैं । ४६

एक सड़क । एक तरफ़ से बैलगाड़ी आती है । दूसरी
तरफ़ से घोड़ागाड़ी । बैलगाड़ी का पहिया पत्थर पर
चढ़ जाता है । बैलगाड़ी घोड़ागाड़ी से टकराती है
और घोड़ागाड़ी उलट जाती है । घोड़ागाड़ीवाला
हिरामन को पीटने लगता है ।

आदमी: अरे बच... कहां जा रहा है? गाड़ीवाला... ४७
ओ गाड़ीवाले का बच्चा... हैं? दिखता नहीं है?

हिरामन: माफ़ कर दो भैय्या । ४८

तांगेवाला: हैं... हैं ४९

हिरामन: माफ़ कर दो । ५०

तांगेवाला: तुम कौन है लाता, इनका? गाड़ी तोड़ के रख दिया । ५१
०० मारता है ००

हिरामन: गाड़ी जान के नहीं तोड़ी है । जान के नहीं किया । ५२

दर्शक: जान के नहीं किया, भाई । ५३

हिरामन: गलती हो गया । माफ़ कर दो । मान जाओ । क़सम खाता हूं । अब कभी बांस नहीं लादेगा । ५४

दर्शक: अरे हां... ५५

हिरामन: अब कभी बांस नहीं लादेगा । बस, बस माफ़ कर दो । अब कभी गलती नहीं होगा । साब, माफ़ी । माफ़ कर दो, अब कभी गलती नहीं करूंगा । अरे, अरे एह.. एह... oo पीड़ा से oo तुम भी नहीं देखते कहां चले जा रहे हो । oo कराहता है oo आह, साब । ५६

oo oo oo oo

oo मुनीम जी बही - खाता का काम कर रहे हैं । हिरामन उनके सामने आता है । ५७

मुनीम: अच्छा हुआ तू आ गया । कल सुबह ही नन्द गांव से बांस लाने हैं । जल्दी निकल जाना । ५८

हिरामन: मैं बांस नहीं लाऊंगा । मेरा हिसाब कर दीजिये । ५९

मुनीम: क्या ? अरे कुछ पैसे चाहियें । तो थोड़े - से अब ले जा । बाक़ी कल ले लेना । ६०

हिरामन: नहीं मुनीम जी, मैंने क़सम खाई है, न मैं बांस लूंगा, ६१

न चोरी - चकारी का माल ।

मुनीम: अजीब आदमी है । भला इतनी रात गये मैं आदमी कहां से ढूंढूं ? जा जा, कल भर ले आना । ६२

हिरामन: मेरा हिसाब कर दीजिये, मुनीम जी । ६३

मुनीम: अच्छा तो फिर गाड़ी रख जा । पर मुझे भी क़सम खानी पड़ेगी कि हिरामन जैसे को गाड़ी नहीं दूंगा । ६४

हिरामन: मत देना । ६५

oo मुनीम जी गिनकर हिरामन का पुलिंदा पकड़ाते हैं । हिरामन हाथ बढ़ाता है । मुनीम जी फिर से रुपये को गिनने लगते हैं । ६६

मुनीम: ठहर जा । ६७

हिरामन: एक बार फिर गिन लो । ६८

मुनीम: गिन लिया, गिन लिया । जा जा जा । ६९

oo oo oo oo

oo मौजी चौधरी से चिट्ठी लिखवा रही हैं । मौजी जो बोलती हैं उसे उनके पति दोहराते हैं और चौधरी लिख डालता है । ७०

चौधरी: डाकघर हरीपुर । ७१

मौजी: जिला पुरेनिया । ७२

आदमी: जिल्ला पुरेनिया । ७३

चौधरी: जिल्ला पुरेनिया नहीं, पुरनिया । ये ले । ७४

आदमी: बाप रे, महाजन की टप्परगाड़ी आ रही है । चलो, चौधरी । तुम भी अन्दर चलो । चलो, चलो । ७५

00 बैलगाड़ी की आवाज़ । ७६

आदमी: शान्ता की मां, कह देना घर में नहीं हैं । ७७

मौजी: शान्ता के बाबू जी घर में नहीं हैं । ७८

हिरामन: घर में नहीं हैं तो फिर कहां गये हैं? आ ह...ह...ह पांवलागी . भऊजी । ७९

मौजी: जुग जुग जियो । अरे यह नई टप्परगाड़ी किस की है? ८०

हिरामन: तुम्हारी । ८१

मौजी: तुम्हारी माने? ८३

हिरामन: हैं? अरे ! ८४

शान्ता: काका आये । काका आये । ८५

हिरामन: आ आ देख देख मैं तेरे लिए नई गुड़िया ले के आया हूं । जा ले ले वहां अन्दर, हां । ८६

शान्ता: मुन्नी, देख मेरी गुड़िया । ८७

मौजी: लेकिन यह गाड़ी है किसकी? ८८

हिरामन: तुम्हें पसन्द नहीं क्या? ८९

मौजी: नई टप्परगाड़ी, भला किसे पसन्द नहीं होगी? तुमने ख़रीदी है क्या? ९०

हिरामन: हां भौजी । ९१

आदमी: कहां से आई यह नई टप्परगाड़ी? अरे भैय्या अब नई टप्परगाड़ी का क़िस्सा सुनने बैठें तो सचमुच महाजन आ जाएगा । चलो चलें । ९२

मौजी: हिरामन । ९३

हिरामन: हूं । ९४

मौजी: सच सच बताना । नई टप्परगाड़ी ख़रीदने के लिए तूने ९५

इतना रुपया कहां से जुगाड़ किया?

हिरामन: देवी मैय्या का परताप भऊजी । ९६

भौजी: झूठ मत बोल । फिर तूने चोर बाज़ारी का माल... ९७

हिरामन: ह्स्स । चोर बाज़ारी का नहीं बाघ । बाघ । ९८

भौजी: बाघ? तो क्या बाघ से कुश्ती लड़कर आया है? ९९

हिरामन: बस यही समझ लो । इत्ता बड़ा बाघ था । हां । १००
०० हिरामन हंसता है ००
नहीं समझी न?
अरी भऊजी, एक सरकस कम्पनी की बाघगाड़ी खींचना था । इस काम को कोई नहीं लेता था । सब गाड़ीवान फेल, सो हमने कहा, हमारा बैल खींचेगा । पूरा डेढ़ सौ रुपया मिला, तो टप्पर गाड़ी ख़रीद ली । अब बोलो ।

भौजी: अरे ओ सूरमा! जा जल्दी नहा के आ। कितनी बास आ रही १०१
है । हूं... जा उठ, जा पहले ।

०० ०० ०० ००

०० स्टेशन के पास । ट्रेन की आवाज़ । १०२

बिखू: अजीब मुसीबत है । यहां तो कोई नज़र ही नहीं आता । १०३

लेकिन आप आराम से बैठी रहिये । अरे भाई, यह गाड़ी किसकी है? ए गाड़ीवान! ओ... ओ... यह तुम्हारी गाड़ी है?

हिरामन: हां । क्यों? १०४

बिखू: गढ़बनेली के मेले जाना है । १०५

हिरामन: गढ़बनेली? अरे वह तो बीस कोस दूर है । तीस रुपया लेंगे । १०६

बिखू: हां, हां भई, दे देंगे । ये पांच रुपये तो तुम बयाने के लेलो और बाक़ी मेला पे पहुंचने पे दे दूंगा । अ... मैं रेलगाड़ी से जा रहा हूं । हैं? १०७

हिरामन: ज़रा सुनो । १०८

बिखू: हां । १०९

हिरामन: कोई चोरी - चपाटी का माल है क्या? ११०

बिखू: अरे नहीं भाई । १११

हिरामन: और बांस? हमको सौ रुपया भी देंगे आप, तो हम बांस का लदी नहीं लेगा । ११२

बिरजू: अरे अन्धा हो गया है क्या? बांस गठरी में बांध के ले जाते हैं? सवारी है, सवारी । ज़नाना । हां । जाता हूं । ११३

00 ट्रेन की आवाज़ । ११४

00 00 00 00

00 एक आदमी छत पर लेटा है । उसने कुछ पी रखा है । सड़क पर भीड़ इकट्ठी हो गई है । हिरामन की बैल गाड़ी इसी सड़क पर आती है । ११५

गिरधारी: अजी मैं नहीं उतरता, नहीं उतरता, नहीं उतरता । अरे नहीं उतरता । ११६

00 नीचे खड़े लोग हंसते हैं । ११७

गिरधारी: अरे सैय्यां, हाथ छोड़ दे, खाट छोड़ दे ... अरे तू भी बहुत . . . तू भी गावई है । ११८

लोगों की आवाज़ें: उतर तू, उतर । उतर जा । उतर जा । 00 लोग हंसते हैं 00 ११९

गिरधारी: नहीं उतरेगा, नहीं उतरेगा । १२०

हिरामन: अरे रास्ता छोड़ के तमाशा देखो भाई । १२१

एक दर्शक: अरे भाई तुम भी देखो । बिन पैसे का खेल है । १२२

00 सब लोग हंसते हैं । १२३

हिरामन: अरे छप्पर से उतरता क्यों नहीं? देखता नहीं कि रास्ता बन्द हो गया । १२४

गिरधारी: अरे छप्पर पर से गाड़ी चलाओगे क्या? ह . . .बड़ा आया लेक्चर फाड़नेवाला । मेरी मर्ज़ी मैं नहीं उतरूंगा । १२५

00 लोग हंसते हैं । १२६

एक लड़का: बातों से नहीं मानोगे? १२७

लोगों की आवाज़ें: उतर, उतर । १२८

हिरामन: अरे अब तो रास्ता छोड़ दो भैयया । 00 गाड़ी हांकता है 00 रास्ता छोड़ दो भैयया । हट जा, हट जा । १२९

00 बैलगाड़ी की आवाज़ और पीछे से "नहीं उतरूंगा, नहीं उतरूंगा" की आवाज़ । बैलगाड़ी गांव पार कर जंगल से गुज़रती है । जानवरों की अजीब अजीब आवाज़ें । हिरामन गाड़ी से उतरकर शिवजी के लिंग के आगे प्रार्थना करता है । १३०

हिरामन: रक्षा करो, भोलेनाथ। रक्षा करो। कोसों तक फैला हुआ सुनसान मैदान। फिर रात का सफ़र। जाने कौन सवारी है। गाड़ी में रह रह कर ख़ुशबू आती है। पीठ में गुदगुदी भी होती है। सिर्फ़ पांव देखा था सो भी जाने सीधा था या उल्टा था। कहीं जिन-परेत न हो। सवा रुपये का परसाद चढ़ाऊंगा, भोलेनाथ। इस दफ़ा रक्षा कर लो। बचा लो मेरे भोलेनाथ। बचा लो। १३१

०० वापस बैलगाड़ी पर चढ़ते समय हिरामन पर्दा हटाकर गाड़ी के अन्दर झांकता है। थोड़ी देर बाद फिर अन्दर झांकता है। लेटी हुई औरत के चेहरे पर चांदनी पड़ती है। हिरामन चौंक उठता है। १३२

हिरामन: उई बाबा! यह तो परी है। १३३

हीराबाई: ००.जग जाती है ०० परी? कहां है परी? १३४

हिरामन: जी ... ओ... १३५

०० हिरामन कपड़े से मुंह पोंछता है। बैल सड़क छोड़ने लगता है। १३६

हीराबाई: आह। १३७

हिरामन: ०० बैलों से ०० अंय? अरे क्या समझ रखा है? बोरे की लदनी है क्या? हूं? हूं रुक? ०० बैलों को मारने को हाथ उठाता है। १३८

हीराबाई: आह! मारो मत। १३९

हिरामन: बैल को मारते हैं तो आपको बुरा लगता है? १४०

हीराबाई: धीरे धीरे चलने दो न। जल्दी क्या है? १४१

०० हिरामन बीड़ी सुलगाने को सलाई जलाता है। १५२

हीराबाई: भैया, तुम्हारा नाम क्या है? १५३

हिरामन: जी, मैं ... १५४

हीराबाई: तुम्हारा नाम क्या है, भैया? १५५

हिरामन: मेरा नाम हिरामन है जी, हिरामन। १५६

हीराबाई: ओह! तब तो मैं भैया नहीं, मीता कहूंगी। १५७

हिरामन: जी? १५८

हीराबाई: मेरा नाम भी हीरा है न। जब एक ही नाम होता है तो मीता कहते हैं। १५९

हिरामन: इस्स। औरत और मर्द के नाम में बहुत फ़र्क होता है। १६०

हीराबाई: ०० हंसती है ०० कहां है फ़र्क़? मैं भी हीरा, तुम भी हीरा। १६१

हिरामन: इस्स। ०० हंसता है और बैलों को हांकता है ०० ह... ह... च... च १६२

०० बैलों से ०० वाह बेटा! कान दुनिया के गप सुनने से तीस कोस मंज़िल कटेगी क्या? इस काले नाटे के पेट में सैतानी भरी है।

०० बैलों को मारने को वह हाथ उठाता है। फिर उसे कुछ याद आया है और वह एकदम रुक जाता है। हीराबाई और हिरामन हंसने लगते हैं। १६३

हीराबाई: तुम्हारे घर में कौन कौन है? १६५

हिरामन: जी बड़ा भाई खेती करता है। भऊजी हैं। शान्ता है, और कजरी। १६५

हीराबाई: और बाल - बच्चे? १६६

हिरामन: शान्ता है, ना। और कजरी के दो बच्चे। १६७

हीराबाई: दोनों लड़के हैं? १६८

हिरामन: कौन लड़के? १६९

हीराबाई: तुम्हारे। १७०

हिरामन: हैं? १७१

हीराबाई: कजरी तुम्हारी बहू है ना? १७२

०० हिरामन हंसता है। १७३

हीराबाई: क्यों? क्या हुआ? १७४

हिरामन: अरे कजरी गाय है गाय। और उसके दो बछड़े हैं। ०० वह हंसता है ०० १७५

हीराबाई: अच्छा। तो अब तक तुम्हारी शादी नहीं हुई? १७६

हिरामन: हुई थी। लेकिन गौने से पहले ही दुलहन चल बसी। १७७

हीराबाई: कितना अरसा हुआ? १७८

हिरामन: बहुत। अरे पंद्रह बीस बरस हो गया। १७९

हीराबाई: अच्छा। फिर शादी नहीं की? १८०

हिरामन: कहां हुई फिर सादी। भऊजी की ज़िद। कुंआरी लड़की से ही सादी करासी। १८१

हीराबाई: ठीक ही तो है । १८२

हिरामन: अजी क्या ठीक है । कुंआरी नहीं समझीं । सात - आठ १८३
बरस की लड़की ।

हीराबाई: हाय राम! यह न होगा, शारदा कानून जो है । १८४

हिरामन: हैं, कौन मानता है सरदा कानून ? हां। १८५
०० बैलों को हांकता है ००

हीराबाई: फिर भाभी राय क्यों नहीं बदल देती? १८६

हिरामन: भउजी सच करके बैठी हैं सो बैठी है । हमने भी तय कर १८७
लिया । सादी नहीं करेंगे ।

हीराबाई: सो क्यों ? १८८

हिरामन: अरे कौन बलायें मोल लेगा । और फिर सादी करके १८९
गाड़ीवानी क्या करेगा कोई । हैं, दुनिया में सब छूट
जाए, हम गाड़ीवानी नहीं छोड़ सकते ।

हिरामन: ०० बैलों को हांकता है ०० बीड़ी पिएं ? गन्ध तो १९०
नहीं लगेगी ?

हीराबाई: नहीं, नहीं, पियो । १९१

हिरामन: अच्छा बताइये, आपका घर कौन जिला में पड़ता है? १९२

हीराबाई: कानपुर । १९३

हिरामन: है? ०० हंसता है ०० १९४

हीराबाई: क्यों? क्या बात है? १९५

हिरामन: वाह रे कानपुर, तब तो नाकपुर भी होगा? १९६

हीराबाई: हां, नागपुर भी है । १९७

हिरामन: ०० हंसता है ०० जा रे जमाना! क्या क्या नाम १९८
बनाये? कानपुर, नाकपुर! ०० हंसता है ००
अच्छा, आपके घर में कौन कौन हैं?

हीराबाई: सारी दुनिया । १९९

हिरामन: जी ? २००

हीराबाई: सारी दुनिया । यह बात और है जिसकी सारी दुनिया २०१
होती है... ह ... उसका कोई नहीं होता ।

०० बैलगाड़ी के दोनों ओर खेत हैं । हीराबाई कापी से पढ़कर २०२
नौटंकी का पार्ट याद कर रही है ।

हीराबाई: प्यारे गोपाल अभी मत जाओ। उहूं... उहूं.. हैं... हैं... २०३
oo हंसती है oo नहीं मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी।
कभी नहीं जाने दूंगी।
अच्छा नहीं मानोगी?
जब क़िस्मत में जुदाई लिखी है तो तुम्हें भी क्यों इल्ज़ाम दूं?
अलविदा।
कहीं भी, कोई भी, अपना नहीं इस ज़माने में।
न आशियाने के बाहर, न आशियाने में।

गाना: सजनवा बैरी हो गये हमार। २०४
सजनवा बैरी हो गये हमार।
चिट्ठियां हों तो हर कोई बांचे।
चिट्ठियां हों तो हर कोई बांचे।
भाग न बांचे कोय।
करमवा बैरी हो गये हमार।

जाए बसे परदेस सजनवा, सौतन के भरमाए। २०५
जाए बसे परदेस सजनवा, सौतन के भरमाए।
न संदेस न कोई खबरिया, रुत आए रुत जाए।
डूब गये हम बीच भंवर में।
डूब गये हम बीच भंवर में।
करके सोलाह पार।
सजनवा बैरी हो गये हमार।

सूनी सेज, गोद मोरी सूनी, मरम न जाने कोय। २०६
सूनी सेज, गोद मोरी सूनी, मरम न जाने कोय।

छटपट तड़पे प्रीत बिचारी, ममता आंसू रोय।
न कोई इस पार हमारा।
न कोई इस पार हमारा।
न कोई उस पार।

सजनवा बैरी हो गये हमार। २०७
चिट्ठियां हों तो हर कोई बांचे।
भाग न बांचे कोय।
करमवा बैरी हो गये हमार।
सजनवा बैरी हो गये हमार।

oo गाड़ी जंगल के बाहर पहुंचती है। इस सड़क पर और २०८
गाड़ियां भी चलती हैं।

हीराबाई: तुमने पर्दा क्यों गिरा दिया, मीता? २०९

हिरामन: आप यहां के लोगों को नहीं जानतीं। औरत देखी, लो २१०
घूरने। देहाती पुच्च कहीं के।

कोई और गाड़ीवान: मेले का क्या हाल है, भाई? २११

हिरामन: अरे, हमको क्या मालूम मेले का। हम तो बिदागी ले २१२
जा रहे हैं।

गाड़ीवान: कौन गांव? २१३

हिरामन: कृत्तापुर - पचीरा । २१४

गाड़ीवान: कृत्तापुर - पचीरा कहां है ? २१५

हिरामन: अरे होगा, तुमसे क्या मतलब ? ०० बैलों से हट... हट ०० २१६

हीराबाई: यह "बिदागी" क्या होता है, मीता ? २१७

हिरामन: जी, "बिदागी" का मतलब, ससुराल जानेवाली लड़की । २१८

हीराबाई: अच्छा, तो मैं ससुराल जा रही हूं । २१९

हिरामन: इस्स । मगर एक बात पूछूं जी ? २२०

हीराबाई: हां । २२१

हिरामन: मेला में आप कहां जा रही हैं ? २२२

हीराबाई: काम करने जा रही हूं । २२३

हिरामन: काम करने ? मेले में क्या काम कीजियेगा ? २२४

हीराबाई: नौटंकी जानते हो ? मैं उसमें काम करती हूं । २२५

हिरामन: जी जानते तो हैं । नौटंकी माने "खेला" । पर देखा नहीं । २२६

हीराबाई: क्यों ? २२७

हिरामन: गांव के बड़े - बूढ़े सब मना करते हैं । और फिर भौजी को भी पसन्द नहीं । २२८

हीराबाई: तो क्या ख़राब हो जाओगे ? २२९

हिरामन: इस्स । ०० हंसता है और बैलों को हांकता है ०० अच्छा एक बात बताइये, वह आदमी कौन है, जो आप को मेरी गाड़ी में बिठा गया ? २३०

हीराबाई: बिरजू । वह रेल से आ जाएगा । २३१

हिरामन: अच्छा तो आप क्यों नहीं रेल से गईं ? २३२

हीराबाई: अगर मैं रेल से जाती, तो तुम से मुलाक़ात कैसे होती ? २३३

हिरामन: इस्स । २३४

हीराबाई: बात असल में यह है मैं एक नौटंकी कम्पनी छोड़कर, चोरी से मेले की नौटंकी के लिए जा रही हूं । २३५

हीरामन: आ, हा... हा... ०० गाता है ०० २३६

जियारा अब तो तनिको न माने
बलमवा बुला दे रे कोय

हाय राम, बलमवा बुला दे रे कोय।

हीराबाई: यह कैसा गीत है? ऐसा तो कभी नहीं सुना। २३७

हिरामन: सुनियेगा कहां से? यह छोकरा- नाच का गीत है। २३८
पहले छोकरा नाचवाले एक से एक गज़ल-खेमटा गाते थे।
अब तो भोपूं पे भैंपू-भैंपू करके जाने कौन गीत गाते हैं लोग।

हीराबाई: क्या देख रहे हो? २३९

हिरामन: जी ... आपका मुंह बिल्कुल ... २४०

हीराबाई: बिल्कुल क्या? बोलो न। २४१

हिरामन: इस्स। आपका मुंह बिल्कुल छोकरा - नाच के मनुवर २४२
नटुवर जैसे दिखता है।

हीराबाई: हाय राम! मैं क्या छोकरा जैसी दिखती हूं? २४३

हिरामन: जी नहीं। वह छोकरे ही लड़की बना हुआ करते थे। २४४

हीराबाई: ओह। 00 दोनों हंसते हैं 00 २४५

हिरामन: आप वह देखिये, तिगछिया आ गया। २४६

00 नदी के पास कुछ पेड़। हिरामन, हीराबाई उतरते हैं। २४७

हिरामन बैलों को गाड़ी से खोलता है। बैल पानी की
ओर भागना चाहते हैं।

हिरामन: 00 बैलों से 00 अरे सबर करो। सबको भूख प्यास २४८
लगी है। अ ... ह ...

हिरामन: यही है कजरी नदी। २४९

हीराबाई: मैं नहा लेती हूं। २५०

हिरामन: हां, हां। पर यहां नहीं। २५१

हीराबाई: क्यों? २५२

हिरामन: यह महुआ घटवारिन का घाट है। यहां कुंआरी लड़कियां २५३
नहीं नहातीं।

हीराबाई: 00 स्वयं से 00 कुंआरी ... ओह। २५४
00 हिरामन से 00 यह महुआ घटवारिन कौन है?

हिरामन: इसी गांव की लड़की थी। यहां नहाती थी। देखने में २५५
बिल्कुल परी जैसी। पुरानी कथा है। एक दिन एक
सौदागर नाव लेकर इसी घाट पर आया और महुआ को
ज़बरदस्ती लेकर भाग गया। उस दिन से यहां कुंआरी
लड़कियां नहीं नहातीं।

00 संगीत । २५६

हीराबाई: अच्छा, तो मैं वहां नहाऊं ? २५७

हिरामन: हां, वहां ठीक है । वहां कोई दोष नहीं । २५८

00 संगीत । २५९

हिरामन: 00 बैलों को सहलाते हुए उन्हें कहता है 00 देखा, २६०
कुंआरी भी हैं ।

00 संगीत । हीराबाई नहाकर लौटती है । २६१

हीराबाई: अब जाके जी जुड़ाया है । २६२

हिरामन: अ...आ...आप । आप गाड़ी की निगरानी करिये । २६३
मैं...मैं अभी आता हूं ।

00 हिरामन खाने का सामान लेकर लौटता है । वह देखता है २६४
कि हीराबाई सो रही है । हीराबाई की टांग पर
चींटी है । हिरामन फूंककर चींटी हटाने की कोशिश
करता है । हीराबाई जग जाती है ।

हिरामन: 00 फूंक मारता है 00 फू...फू २६५

हीराबाई: 00 चौंककर 00 ओह ! २६६

हिरामन: चींटी । २६७

हीराबाई: नींद आ गई । २६८

हिरामन: अ...आइये । दो मुट्ठी जलपान कर लीजिये । २६९

00 हीराबाई गाड़ी से उतरकर ज़मीन पर दरी बिछाती है । २७०

हीराबाई: इतनी चीज़ें कहां से लेकर आये ? २७१

हिरामन: इस गांव का दही बहुत मशहूर है । २७२

00 हिरामन हीराबाई के सामने पत्तल रखता है । २७३

हीराबाई: अब तुम बिछाओ पत्तल । २७४

हिरामन: मैं ! नहीं नहीं, पहले आप खा लीजिये । २७५

हीराबाई: पहले - पीछे क्या ? बिछाओ न । २७६

हिरामन: इस्स । आप खाइये न । मैं बाद में खा लूंगा । लीजिये, २७७
लीजिये ।

हीराबाई: तुम नहीं खाओगे तो समेटकर रख लो अपनी झोली में । २७८
मैं भी नहीं खाऊंगी ।

हिरामन: इस्स . . . लीजिये । २७९

हीराबाई: खाओ न । २८०
ऊं, सचमुच यहां का दही बहुत अच्छा है ।

हिरामन: हं... हं ... २८१

हीराबाई: खाओ । २८२

हिरामन: जी । २८३

00 00 00 00

00 बैलगाड़ी सड़क पर चल रही है । किसी गाड़ी की आवाज़ २८४
सुनाई देती है ।

गाड़ीवान: कहां जा रहे हो भाई ? मेला? २८५

हिरामन: नहीं, कुल्मां गांव जा रहे हैं । डाक्टरनी साहब को २८६
लेकर ।

गाड़ीवान: कहां की डाक्टरनी है? २८७

हिरामन: अरे सिरपुर का हस्पताल है न, वहीं की । मरीज़ २८८
देखने जा रही हैं ।

गाड़ीवान: 00 प्रतिध्वनि में गाड़ीवान गाता जा रहा है 00 २८९
"मन में समाई, काहे को दुनिया बनाई...
तूने काहे को दुनिया..."

हीराबाई: यहां देसती हूं, हर कोई गीत गाता रहता है । २९०

हिरामन: गीत नहीं गाएगा, तो करेगा क्या? कहते हैं: २९१
"फटे कलेजा गाओ गीत, दुख सहने का यह ही रीत ।"

हीराबाई: तुम्हारी यहां की भाषा में गीत और भी मीठा लगता है । २९२
लगता है सुनती ही रहूं ।

हिरामन: यह महुआ घटवारिन का गीत है । वह कजरी नदी २९३
का घाट था न । बस उसी का ।

हीराबाई: अच्छा, तुम्हें आता है यह गीत? सुनाओ न, मीता । २९४

हिरामन: इस्स । गांव का गीत सुनने का बड़ा सौक है आपको । तब २९५
तो लीक छोड़ना पड़ेगा । चालू रस्ते पे कोई कैसे गा सकता
है? ठीक है, हरिपुर होकर नहीं जाएंगे । हैं?
00 बैलों को हांकता है 00

गाड़ीवान: 00 हिरामन को लीक काटते देखकर, चिल्लाकर 00 २९६

आ... ओ गाड़ीवान! लीक छोड़कर बेलीक वहां किधर?

हिरामन: अरे कहां है बेलीक? वह सड़क क्या नकपुर जाएगी? २९७
00 स्वयं से 00 इस मुल्क के लोगों में बस यही बात बहुत बुरा है। राह-चलते से जिराह करेंगे। कहां जा रहे हो? कौन गांव है? कहां से आये हो? गाड़ी में कौन बैठा है? अरे तुमको जहां जाना है जाओ। देहाती बुच्च कहीं के।

हिरामन: 00 हीराबाई से 00 ह... ह ... घबराइये मत। २९८
यह रास्ता भी मेला पहुंचा देगा। राह - घाट के सब लोग बुच्च हैं।

हीराबाई: राह - घाट के लोग कैसे भी हों। तुम जो मेरे साथ हो। २९९
अब सुनाओ गीत।

हिरामन: वह जो महुआ घटवारिन का घाट था न। उसी मुल्क की ३००
थी महुआ। थी तो घटवारिन लेकिन सौ सतवंती में एक। उस का बाप दिन-दिहाड़े ताड़ी पी के बेहोश पड़ा रहता था। उसकी सौतेली मां थी, साक्षात राक्षसनी। महुआ कुंआरी थी। भरी - पूरी दुनिया में कोई न था उसका।

गाना: दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई ३०१
कातह को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई
दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई।

00 हिरामन और हीराबाई नदी के पास खड़े हैं। जब हिरामन ३०२
महुआ के गुण गान करने लगता है, तब हीराबाई लजा जाती है।

हिरामन: कैसे करूं महुआ के रूप का बखान। हिरणी जैसी कजरारी ३०३
आंखें, चांद- सा चमकता चेहरा, एड़ी तक लम्बे रेशमी बाल। जब वह मुस्कुराती तो जैसे बिजली कौंध जाती। भगवान जी ही ऐसा रूप भर सकते हैं माटी के पुतले में।

गाना: काहे बनाये तूने माटी के पुतले ३०४
धरती यह प्यारी प्यारी मुखड़े ये उजले
काहे बनाया तूने दुनिया का खेला
काहे बनाया तूने दुनिया का खेला
जिसमें लगाया जवानी का मेला
गुपचुप तमाशा देखे, वाह रे तेरी खुदाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने मन में समाई
दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई

हिरामन: जवान हो गई थी महुआ। फिर भी कहीं शादी- ब्याह ३०५
की बात नहीं चलाई किसी ने। सुबह शाम वह अपनी मरी मां को याद करके रोती। रात - दिन कलपता था बिचारी का मन। मन समझती हैं न आप?

गाना: तू भी तो तड़पा होगा मन को बनाकर ३०६
तूफ़ां यह प्यार का मन में छुपा कर

कोई छवि तो होगी आँखों में तेरी
कोई छवि तो होगी आँखों में तेरी
आँसू भी छलके होंगे पलकों से तेरी
बोल क्या मूरती तुझको काहे को प्रीत जगाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई
दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई ।

हिरामन: एक दिन एक थका - प्यासा मुसाफ़िर नदी किनारे पानी ३०७
पीने लगा । महुआ को देखते ही उस पर रीझ गया ।
नादान महुआ भी उसे दिल दे बैठी । जंगल की आग की
तरह गांव में फैल गई थी प्यार की बात । सौतेली मां
भला कैसे देख सकती थी उनका सुख । उसने महुआ को एक
सौदागर के हाथ बेच दिया । रोती - छटपटाती महुआ
चली गई सौदागर के साथ । बिछुड़ गई जोड़ी । महुआ
का प्रेम आज भी जैसे रोता है ।

गाना: प्रीत बना के तूने जीना सिखाया ३०८
हंसना सिखाया रोना सिखाया
जीवन के पथ पर मीत मिलाये
जीवन के पथ पर मीत मिलाये
मीत मिला के तूने सपने जगाये
सपने जगा के तूने काहे को दे दी जुदाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई
दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई

हीराबाई: तुम तो उस्ताद हो, मीता । ३०९

हिरामन: इस्स । क्या कहती हैं आप । ३१०

हीराबाई: मैं सच कहती हूं । तुम तो मेरे गुरू हो । हमारे धर्म- ३११
शास्त्रों में लिखा है कि एक अक्षर सिखानेवाला गुरू
और एक राग सिखानेवाला...

हिरामन: आप शास्त्र - पुराण भी जानती हैं । ... मैंने क्या ३१२
सिखाया है आपको?

हीराबाई: क्यों नहीं सिखाया । यह गीत... हूंऽऽऽ ३१३
०० आलाप लेती है ००
प्रीत बना के तूने जीना सिखाया
हंसना सिखाया रोना सिखाया
जीवन के पथ पर मीत मिलाये
जीवन के पथ पर मीत मिलाये
मीत मिला के तूने सपने जगाये
सपने जगा के तूने काहे को दे दी जुदाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई ।

०० रास्ता ऊबड़ - खाबड़ है । गिरने से बचने के लिए ३१४
हीराबाई हिरामन का सहारा लेती है ।

हीराबाई: आ, ऊ ... ३१५

०० पानी पार कर गाड़ी मेले के नज़दीक आती है । ३१६

हिरामन: इस्स । इत्ता तेज जहन । अब यह गीत हमसे नहीं गाया जायेगा ।

हीराबाई: क्यों ?

हिरामन: इससे बढ़िया कोई क्या गा सकता है? आपने तो जान डाल दिया इस गीत में ।

हीराबाई: देखो, देखो मीता ।

हिरामन: मेले की आतिशबाज़ी है ।

हीराबाई: मेला आ गया क्या?

हिरामन: जी ।

हीराबाई: इतनी जल्दी? मालूम ही नहीं पड़ा ।

हिरामन: जल्दी कहां । पूरे तीस घंटे लगे हैं ।

हीराबाई: तीस घंटे गुज़र गये?

हिरामन: जी?

हीराबाई: कुछ नहीं ।

०० मेला पहुंचने पर हिरामन बैलों के आगे पानी की बाल्टी रखता है । फिर हीराबाई से चाय पूछता है ।

हिरामन: मैं आपके लिए चाह ले आता हूं ।

हीराबाई: क्या?

हिरामन: चाह ।

हीराबाई: अच्छा, अच्छा, चाय ।

हिरामन: जी ।

हीराबाई: इतनी रात गये चाय कौन पिएगा?

हिरामन: मुझे मालूम है । कम्पनी के लोग हरदम चाह पीते रहते हैं । चाह है कि जान । लाइये लोटा दीजिये ।

हीराबाई: लो ।

०० चायवाले की दुकान पर लोग नौटंकी की चर्चा कर रहे हैं ।

पहला आदमी: अरे वैसे कहलक हेन जे कि खोलो पैसा तो देखो तमासा । से जेकरा तमासा देखल के होय । जिंदगी के मजा लूटल जे चाहे । जे सहर जाय, गांव में की देखत ? ऊंचका परार कोठी? ...

दूसरा आदमी: अच्छा? ३४०

पहला आदमी: होयओ, वहां के की की कहूं हम सहर क रंग हाल? ३४१
हुक्का गटा जाके खरारल बैंत छोड़ी सब। सरक पर दर
साइकिल के ऐस कैने ट्रिंग-ट्रिंग घंटी बजबे जखने वहां से
सब निकल जइय। जाके देखनेवाला के घाम छूट जाइया।

दूसरा आदमी: हां? ३४२

पहला आदमी: तेकरा बाद सिनेमा। तेकरा मजा लूटबे सिनेमा के? ३४३
सब से कम पाई दियौ और सब से आगे मैं जाके बैसू।
मन हो तो हाथ बढ़ा के परदो छू लिया। अरे इहन इहन
कठधर कौडी के फोटो! आह! आह! आह!
पिस्तौलवाली, तमंचाजान, माने घोड़ा पर हाथ पड़ल।
कि टोटा फैट मेल। एहन एहन बुलेट मार सब हिरोइन।

दूसरा आदमी: एआओ। हारमोनियम ने हिरानी की कहलियई? ३४४

पहला आदमी: हिरानी नहीं, हिरानी नहीं। हिरोइन, हिरोइन ३४५
कहैके फिलिंग स्टार के।

दूसरा आदमी: फिलिंग स्टार? ३४६

पहला आदमी: हओ, बुलेटमार। ३४७

तीसरा आदमी: अरे क्या फिलिंग स्टार बुलेटमार लगा रखा है? ३४८

कल देखना मेले में आ रही है हीराबाई।

00 हंसने की आवाज़। हिरामन दुकान के पास आता है। ३४९
इन लोगों की बात सुनकर मन ही मन मुस्कराता है।

चायवाला: हां भाई, क्या चाहिये? ३५०

हिरामन: हां ह. . .चाह देना। ३५१

चायवाला: कितना? ३५२

हिरामन: अ . . . एक लोटा। ३५३

चायवाला: एक लोटा तीन आने का? दो आने का? ३५४

हिरामन: अरे तीन आने का नहीं, चार आने का, चार आने का। ३५५
हां।

00 चायवाला चाय देता है। ३५६

हिरामन: अरे एक ठो चोकर भी देना। ३५७

चायवाला: ये लो। ३५८

00 हीराबाई बैठी है। हिरामन चाय लेकर आता है। ३५९

हिरामन: लीजिये । चाह पीजिये । गरम है, सम्भालियेगा । ३६०
०० बैलों से ०० हैअ . . .ट

०० हरिाबाई चोकर में चाय डालकर लोटा हिरामन की ओर ३६१
बढ़ाती है ।

हीराबाई: लो । ३६२

हिरामन: हैं... जी हम चाह नहीं पीते । ३६३

हीराबाई: क्यूं? ३६४

हिरामन: कुंआरे आदमी को चाह नहीं पीनी चाहिये । ३६५

हीराबाई: किसने कहा तुमसे? ३६६

हिरामन: जी, मैं जानता हूं । एक बार पी थी । ३६७

हीराबाई: फिर? ३६८

हिरामन: बड़ी गरम तासीर है । ३६९

हीराबाई: गरम तासीर मेरे लिए नहीं है? लो । ३७०
०० हिरामन को लोटा देती है ००

हिरामन: अच्छा लाइये । आप कहती हैं तो चाय पी लेता हूं । ३७१

हीराबाई: अच्छा पीता । रात बहुत हुई है क्या? ३७२

हिरामन: जी, यह कोई दस बजा होगा । ३७३

हीराबाई: दस बज गये? ३७४

हिरामन: जी । ३७५

हीराबाई: फिर आज रात तुम्हारी गाड़ी में ही रहूंगी । कल सुबह कम्पनी जाऊंगी । ३७६

हिरामन: जैसी आपकी इच्छा । ह... ह... । मैं सोने का इन्तज़ाम कर देता हूं । ३७७

हीराबाई: अभी कुछ दिन मेले में रहोगे न? ३७८

हिरामन: जी कुछ ठीक नहीं । सवारी मिले तो चला भी जाऊं । ३७९

हीराबाई: इतना पैसा कमाकर क्या करोगे? दो- चार दिन मेले में रहकर नौटंकी देखना । ३८०

हिरामन: जी ... जी... मैं ... मैं नौटंकी थियेटर नहीं देखता । कहा न आपसे भौजी गुस्सा करती हैं । ३८१

हीराबाई: चुपचाप देख लेना । भाभी को पता भी नहीं लगेगा । ३८२

हिरामन: इस्स । ०० ढोलक और संगीत की आवाज़ ०० ३८३
आप आराम कीजिये । मैं अभी आता हूं ।

०० ०० ०० ००

०० गाड़ीवानों की मंडली गाना गा रही है । हिरामन भी जाकर मंडली में शामिल हो जाता है । ३८४

गाना: चलत मुसाफ़िर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया ३८५
चलत मुसाफ़िर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया
चलत मुसाफ़िर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया
हां चलत मुसाफ़िर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया

उड़ उड़ बैठी हलवइया दोकनिया ३८६
उड़ उड़ बैठी हलवइया दोकनिया
हे रामा, उड़ उड़ बैठी हलवइया दोकनिया

अरे, बर्फ़ी के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया ३८७
बर्फ़ी के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया
बर्फ़ी के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया

हे हे हे हे हे हे ... हे रामा

उड़ उड़ बैठी बजवा दोकनिया ३८८
उड़ उड़ बैठी बजवा दोकनिया
आ हा, उड़ उड़ बैठी बजवा दोकनिया

अरे, कपड़ा के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया ३८९
कपड़ा के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया
कपड़ा के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया

तुम जिओ, तुम जिओ पलटदास, तुम जिओ । ३९०

उड़ उड़ बैठी पनवड़िया दोकनिया ३९१
उड़ उड़ बैठी पनवड़िया दोकनिया
हे रामा, उड़ उड़ बैठी पनवड़िया दोकनिया

अरे, बीड़ा के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया ३९२
अहां, बीड़ा के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया
बीड़ा के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया

हां, चलत मुसाफ़िर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया ३९३
चलत मुसाफ़िर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया
चलत मुसाफ़िर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया

०० गाना ख़त्म होता है । गाड़ीवान हिरामन का स्वागत करते हैं । ३९४

पलटा: अरे भई, जय सियारामचन्द्र की । ३९५

हिरामन: जय सियाराम । ३९६

पलटा: कैसन ख़बर बा? ३९७

हिरामन: अच्छी है । ३९८

धुन्नीराम: गाड़ी कहां है, हिरामन भाई? ३९९

हिरामन: वह रही ना । नई टप्पर । ४००

पलटा: ख़रीदी है क्या? ४०१

हिरामन: हां, ख़रीदी है । ४०२

लालमोहर: चलो न तुम्हारी नई टप्पर गाड़ी देखें । कितने में ली है? ४०३

हिरामन: पूरे डेढ़ सौ में । ४०४

धुन्नीराम: वे सारकसवाले डेढ़ सौ? ४०५

हिरामन: हां, वही । ४०६

धुन्नीराम: वही कह रहा था न मैं तुम लोगों से । क्या लदनी लाये गाड़ी में? ४०७

हिरामन: लदनी नहीं, सवारी है, सवारी । ४०८

धुन्नीराम: अरे परदा तो ऐसन लगाए कि जैसे नई नवेली जुहवा लेकर मेला देखने आई हो । ४०९

पलटा: है हिरामन भाई । ४१०

हिरामन: अरे आहिस्ता बोलो । इधर आओ । अरे वाह, इधर को आ । तू कहां उधर, घूर घूर के क्या देख रहा है । है? ४११

लालमोहर: लेकिन परदे के अन्दर है कौन? ४१२

हिरामन: क्यों? ४१३

लालमोहर: अरे बता तो सही, कौन है? ४१४

हिरामन: कम्पनी की बाई है । नौटंकी कम्पनी । ४१६

लालमोहर: हैं! ४१७

पलटा: कम्पनी! ४१८

धुन्नीराम: नौटंकी! ४१९

लहसनवा: हे मालिक । ४२०

लालमोहर: अबे चुप रह । चल भात पका जा के । ४२१

०० हीराबाई गाड़ी के पीछे बैठी है । दोस्तों से अलग होकर हिरामन हीराबाई से बात करता है । ४२२

हिरामन: अ... होटिल में खाना नहीं मिलेगा। कहिये तो ४२३
हलवाई से पक्की ले आएं।

हीराबाई: मैं अब खाना नहीं खाऊंगी। ज़रा ध्यर आओ। यह लो। ४२४
०० वह रुपये का नोट हिरामन के आगे करती है ००
तुम खा ओ।

हिरामन: ०० वह रुपया नहीं लेता है ०० ख्स्स। यह नहीं ४२५
होगा।

लालमोहर: हम लोगों के होते हुए हिरामन बाज़ार में क्यों खाने लगा। ४२६
नमस्ते जी।
चार आदमी के भात में दो आदमी और मज़े में खा सकते हैं।

हिरामन: अ ... हां, हां। आप आराम कीजिये। हम लोग ४२७
जाते हैं। हां, चलो।

०० चारों गाड़ीवान पानवाले की दुकान के सामने। ४२८

लालमोहर: आओ, ज़रा पान खाया जाय। ०० पानवाले से ०० ४२९
चार पान लगाओ। हिरामन भाई, लो।

हिरामन: अ ... एक बीड़ी लूंगा। ४३०

धुन्नीराम: कमाल है हिरामन भाई, उस दिन कम्पनी का बाघ। अब ४३१

कम्पनी की औरत। तुम तो एकदम कम्पनी-बाज़ हो गये।

लहसनवा: ए मालिक। ४३२

लालमोहर: अरे तू कहां घुसा बड़े लोगों के मामले में? चल भाग यहां ४३३
से।

हिरामन: देख लालमोहर, तुम भी देखी भचर-भचर मत करो, ४३४
हां। हां... हम लोगों के देस-मुलुक का जनाना नहीं
जो लटपट बात सुनकर भी चुप रह जाए। एक तो पच्छिम
की है, तिस पर कम्पनी। हूं...

धुन्नीराम: लेकिन हिरामन भाई, हमने तो सुना है कि कम्पनी में ४३५
बेश्या रहती है।

हिरामन: अरे हट। ४३६

लालमोहर: अरे तू कैसा आदमी है रे धुनिया। दिमाग तो सही सलामत ४३७
है तेरा।

पलटा: ही ही ही ही, अक्कल नहीं इक्के बा। लाओ हिरामन ४३८
भाई।

धुन्नीराम: लेकिन हमने सुना है। ४३९

पलटा: सुना ना है, देखा तो नहीं? ४४०

धुन्नीराम: अरे नहीं । अरे नहीं देखा । अरे नहीं देखा । झूठ नहीं बोलूं । ४४१

हिरामन: तो लटपट बात क्यों करते हो? जो बात नहीं जानते मत किया करो । ४४२

पलटा: लेकिन हिरामन भाई, जनाना जात गाड़ी में अकेली रहेगी । कुछ दरकार हो तो । ४४३

लालमोहर: हां हिरामन, पलटा ठीक कहता है । मैं जाता हूं । ४४४

हिरामन: नहीं लालमोहर । ४४५

धुन्नीराम: ए हिरामन भाई, हम जायें? ४४६

हिरामन: अरे नहीं रे । ४४७

लहसनवा: ए हिरामन मालिक, हम कऊ हुक्म करो... ४४८

हिरामन: फिर बीच में आ गये । पलटदास इधर आ । तुम भगत आदमी । तुम जाओ गाड़ी के पास । और सुनो... वहां जाकर परवचन मत करने लगना । ४४९

पलटा: ही ही ही ही, जय सियाराम । ४५०

लालमोहर: अरे पान क्या हुआ? ४५१

पानवाला: ए लो न... ४५२

oo oo oo oo

oo पलटदास टप्पर गाड़ी के पास जाकर बैठ जाता है । हीराबाई के पैर पर्दे के बाहर हैं । पलटा हाथ जोड़कर पैरों की आराधना करता है । आवाज़ सुनकर हीराबाई पर्दे के बाहर झांकती है । ४५३

हीराबाई: कौन? ४५४

पलटा: जी । हम हैं पलटदास । हिरामन भाई ने भेजा है । कोई सेवा? ४५५

हीराबाई: सेवा? नहीं, नहीं । ४५६

पलटा: तो फिर मैं बैठता हूं । हिरामन ने कहा था साइद कोई दरकार पड़ जाए । ४५७

हीराबाई: ठीक है, बैठो । ४५८

पलटा: ह... ह... जय सियाराम । ४५९

oo पायल की आवाज़ । हीराबाई के पैर फिर पर्दे के बाहर दिखाई देते हैं । सिर झुकाकर पलटा चरण - स्पर्श करता है । ४६०

पलटा: आ... हा... हा... हा... ४६१

हीराबाई: ०० वह चौंक जाती है ०० क्या बात है? यह क्या कर रहे तुम? ४६२

पलटा: आ... आ... ४६३

हीराबाई: क्या चाहिये तुम्हें? ४६४

पलटा: जी, माताश्री। ४६५

हीराबाई: हां, हां, बोलो। ४६६

पलटा: चरण - सेवा। ४६७

हीराबाई: क्या? ४६८

पलटा: जी ... मैं सेवक ... आप सिया सुकुमारी ... आपके चरणों की सेवा ... ४६९

हीराबाई: अरे भाग यहां से। भाग। ४७०
०० स्वयं से ०० हं ... पागल कहीं का।

०० ०० ०० ००

०० गाड़ियों के पास हिरामन, धुन्नीराम और लालमोहर ४७१

बातें कर रहे हैं। इसी बीच पलटा लौट आता है।

लालमोहर: अरे हिरामन भाई, कुछ भी कहो, हो तुम करम सवन। ४७२

हिरामन: अरे क्या बतायें, एक बार तो मैं घबरा ही गया। ४७३

लालमोहर: ऐसा? ४७४

हिरामन: अरे सोचा, जिन्न है? परी है?... रात का सफ़र है। अब तुम्हीं बताओ। अरे एक ... ४७५
०० पलटा को वापस आते देखकर ०० पलटा ... क्या हुआ? ... अरे बोल न, क्या हुआ? उधर सब ख़ैरियत है कि नहीं?

पलटा: हां हां... हां, सब ख़ैरियत है। हमें एक काम मिल गया है। एक टीशन लादकर व्यापारी ले जाना है। ४७६

लालमोहर: अरे कम्पनी को अकेला छोड़कर तू... ४७७

पलटा: अरे कम्पनी बड़े मजे में है। अच्छा... अच्छा, हम चले। जय सियारामजी की। ०० पलटा जाता है ०० ४७८

हिरामन: अरे इसे क्या हो गया? ४७९

धुन्नीराम: अरे पैसे पैसे का हिसाब जोड़ता है। ४८०

लालमोहर: चोर है चोर । अपने को भगत बनता है । ४८१

लहसनवा: ०० दौड़ता आता है ०० ए हिरामन मालिक, ४८२
कम्पनी आपको बुला रही है । और एक आदमी ...

हिरामन: कौन आदमी ? ४८३

लहसनवा: सो तो नहीं मालूम । पर कुछ घुसर पुसर बतिया रहा था । ४८४

हिरामन: चलो, देखें । ४८५

०० ०० ०० ००

०० मेले में बिरजू हीराबाई से कुछ कह रहा है । ४८६

हीराबाई: लेकिन... ४८७

बिरजू: अ... घबराने की कोई बात नहीं है । मनिजर से बात ४८८
पक्की कर ली है । कल से खेला शुरू हो जाएगा ।

०० तब तक हिरामन और बाकी गाड़ीवान वहां पहुंच जाते हैं । ४८९

हीराबाई: ०० हिरामन से ०० आओ हिरामन, ये लो तुम्हारे ४९०
पच्चीस और यह दक्षिणा । पूरे पचास ।

हिरामन: इस्स । ४९१

बिरजू: अ ... यह क्या कर रही हैं आप ? पांच रुपये तो ४९२
पेशगी दे चुके हैं । अ ... पच्चीस रुपये दीजिये बस ।

हीराबाई: लो मीता । लो न मीता । लो न । ४९३

लालमोहर: अरे राम...बक्सीस दे रही हैं, मालकिन । ले लो न । ४९४
इसमें...

हीराबाई: कल कम्पनी में आकर मिलना । पास बनवा दूंगी । ४९५

धुन्नीराम: अ ... गाड़ी - बैल छोड़कर नौटंकी कैसे देखेगा कोई ४९६
गाड़ीवान ? अ...मेले में...

हीराबाई: तुम चुप क्यूं हो हिरामन ? अपने रुपये तो लो । ४९७
लो न ।

बिरजू: अरे... ए कोई सामान पहुंचानेवाला मिलेगा ? ४९८

लालमोहर: हां...हां, जरूर । अरे ओ लहसनवा । ४९९

लहसनवा: जी आया मालिक । ०० वह सामान उठाता है ०० ५००

हीराबाई: ०० हिरामन से ०० अच्छा मीता, मैं जाऊं ? ५०१

०० हीराबाई हिरामन के हाथ में रुपये रखकर चली जाती है । ५०२
हिरामन उसी ओर ताकता रहता है ।

00 मेले के आगे लोग खड़े हुए हैं । ५०३

जोकर: भाइयो और बहनो । 00 ढोल की आवाज़ 00 है तेरे की । यहां तो बहनो है ही नहीं । ख़ैर कोई बात नहीं । भाइयो, आज रात ग्रेट भारत नौटंकी कम्पनी में क्या? ... गुलबदन देखिये । 00 ढोल बजाता है 00 आप लोगों को तो मालूम ही होगा... हिन्दुसभा की लालपरी, लाखों की आंखों का नूर, मशहूर एक्ट्रेस हीराबाई हमारी कम्पनी में आ गई है... ५०४

00 जोकर और ढोल बजानेवाला नाचने लगते हैं । ढोल बजानेवाला गाता है: ५०५

गाना: ५०६
तेरी बांकी अदा पे मैं ख़ुद हूं फ़िदा
अपनी चाहत का दिलबर बयां क्या करूं
यह ही ख़्वाहिश है तुम मुझको देखा करो
यह ही ख़्वाहिश है तुम मुझको देखा करो
और दिलोजानी मैं तुम को देखा करूं
यह ही ख़्वाहिश है तुम मुझको देखा करो ।

00 जोकर छपे इश्तिहारों के काग़ज़ ऊपर फेंकता है । लोग काग़ज़ ले जाते हैं । अगले शाट में तीनों गाड़ीवान साथ हैं और इश्तिहार को देख रहे हैं । ५०७

लालमोहर: देखा क्या जय जयकार हो रहा है हीराबाई का । ५०८

धुन्नीराम: छापा-फारम भी है । ५०९

लालमोहर: क्यूं, क्या ख़याल है, हिरामन? चलो, नौटंकी देखने का बंदोबस्त करें? हैं? ५१०

धुन्नीराम: फोकट में ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा । हां । ५११

हिरामन: पर गांव में बात पहुंच गई तो? एक रात नौटंकी देखकर जिन्दगी भर बोली- ठोली कौन सुनेगा । ... देसी मुर्गी, बिलायती चाल । हां । ५१२

धुन्नीराम: फोकट में नौटंकी देखने से भी मौजी बात सुनाएगी? ५१३

लालमोहर: सुनाएगी क्यूं नहीं । लेकिन गांव में बात पहुंचे क्यों? ५१४

धुन्नीराम: हम तो क़सम खाने को तैयार । ५१५

हिरामन: हां, तो सबको गंगा क़सम उठानी पड़ेगी । ५१६

लालमोहर: हां । ५१७

हिरामन: गांव में उड़ती चिड़िया को भी ख़बर नहीं मिले । हां? ५१८

लालमोहर: हां । ५१९

हिरामन: और कम्पनी कह गई है । सोचने की बात है । है? ... ५२०

क्यों ? 00 हंसता है 00

00 दोनों से 00 ए... ज़रा कन्धा झुंघ तो ।

लालमोहर: क्यों क्या हुआ कन्धे को ? ५२१

हिरामन: अरे झुंघ तो । ५२२

लालमोहर: अ... हा... हा... हाय... हाय... हाय । ५२३

हिरामन: तनिक हाथ रखा था सिर्फ़ । समझे... हां । ५२४

धुन्नीराम: अरे ... धन्य हो । ५२५

लालमोहर: बड़े क़िस्मतवाले हो यार । ५२६

हिरामन: फिर तो नौटंकी देखने चलें ? हैं ? क्यों लालमोहर ? ५२७

लालमोहर: अरे जरूर । ५२८

हिरामन: आह । कल कह गई थी न ? हैं ? ५२९

हिरामन: कम्पनी कह गई थी । तो चलो पास कटवा लाएं । हैं ? ५३०
चलो, आओ, चलें... यार ।

00 तीनों नाटक के तम्बू को जाते हैं । तम्बू पर हीराबाई ५३१

का चित्र टंगा है । उसे देखकर हिरामन खुश हो जाता है ।

हिरामन: आ... हा... हा... लालमोहर। ५३२

लालमोहर: हां । ५३३

हिरामन: लिखा क्या है ? ५३४

लालमोहर: अरे भैय्या नाम लिखा होगा । ५३५

हिरामन: आह... 00 चित्र देखने में मग्न है 00 ५३६

धुन्नीराम: हिरामन भाई, चलो, चलो न । हिरा भाई । ५३७

हिरामन: हं... हं... ५३८

धुन्नीराम: चलो, चलो न । ५३९

लालमोहर: उससे पूछें ? 00 उन्हें नौटंकी का कोई आदमी ५४०
नज़र आता है 00

हिरामन: हैं ? किससे ? 00 लालमोहर को 00 तुम पूछ । ५४१
तुम पूछ । तुझे तो बाबू बोली आती है न ।

लालमोहर: ओ बाबू साहब । ५४२

बाबू: क्या है? ५४३

लालमोहर: ओह जी... जी... जी यहां बुल्गुल... ५४४

बाबू: बुल्गुल क्या? ५४५

लालमोहर: नहीं जी गुल्गुल... नहीं नहीं... बुल्गुल... ५४६

बाबू: बहादुर। ०० सिपाही को बुलाता है ०० ५४७

बहादुर: जी कम्पनी बाबू। ५४८

बाबू: ये लोग कौन हैं? ५४९

बहादुर: ये लोग कौन... ए तुम लोग कौन हो? ५५०

हिरामन: अ... साहब... देखिये... मैं... हीरादेवी को... ५५१
मेरा नाम हिरामन है जी, हिरामन।

बहादुर: भागो यहां से। चलो, चलो। ५५२

०० इसी बीच हीराबाई पर्दे के बाहर आती है। ५५३

हीराबाई: यहां आओ हिरामन। ०० फिर बहादुर से कहती ५५४
है ०० बहादुर, इन्हें पहचान लो। यह है मेरा
हिरामन। जब भी आएं, आने देना।

बहादुर: जी हुजूर। ५५५

हीराबाई: ०० हिरामन से ०० आओ मीता... आओ न। ५५६
०० वे हीराबाई के तम्बू की ओर जाते हैं ००
अन्दर आओ। बैठो।

हिरामन: यह आपका घर है? ५५७

हीराबाई: घर नहीं, तम्बू है, मीता। बैठो। तुम्हारे साथ ५५८
सफ़र के दो दिन कैसे कट गये? पता भी नहीं चला।

हिरामन: इस्स। ५५९

हीराबाई: नौटंकी देखने आओगे न? ५६०

हिरामन: ज़रूर आएंगे। ५६१

हीराबाई: रोज़ रात को आना। ५६२

हिरामन: हां। लेकिन वे मेरे साथी? ५६३

हीराबाई: उनको भी ले आना। कितने आदमी हैं? ५६४

हिरामन: हां?..... हम सब हैं... ०० गिनता है ०० ५६५
पांच जन हैं।

हीराबाई: अच्छा तुम बैठो । मैं अभी आती हूँ । ५६६

oo वह बाहर जाती है । हिरामन खाट पर बैठता है । ५६७

oo oo oo oo

oo गाड़ीवान सिपाही से दोस्ती बढ़ा रहे हैं । ५६८

धुन्नीराम: दरबान जी, चलिये न, ज़रा पान खा आएँ । ५६९

दरबान: और मैनेजर साहब ने बुलाया तो? ५७०

लालमोहर: तो क्या होगा? देखा नहीं आपने? हम हीराबाई के आदमी लोग हैं । ५७१

धुन्नीराम: हां । ५७२

लालमोहर: चलिये, चलिये, चलिये । जहांपनाही पान खिलाएंगे आपको । ५७३

oo oo oo oo

oo हिरामन तम्बू में बैठा किसी इत्र - पाउडर की बोतल को सूंघ रहा है । हीराबाई को आते देखकर बोतल वापस रखता है । ५७४

हीराबाई: ए लो, पांच पास । आठ आने दर्जे का है । आना ज़रूर । ५७५

हिरामन: आठन्नी दरजा । ५७६

हीराबाई: अच्छा मीता, मैं चली । मुझे रिहर्सल में जाना है । ५७७

हिरामन: हों? ५७८

हीराबाई: रिहर्सल में जाना है । ५७९

oo हीराबाई तम्बू के बाहर जाती है । हिरामन अपने दोस्तों के पास आता है । ५८०

लालमोहर: क्या हुआ, हिरामन? ५८१

हिरामन: लालमोहर, यह रिसाल क्या होता है? ५८२

लालमोहर: रिसाल? ऐं? ओ दरबान जी, यह रिसाल क्या होता है? ५८३

दरबान: रिसाल माने प्रेक्टिस, प्रेक्टिस... प्रेक्टिस का मतलब नहीं समझा? प्रेक्टिस का मतलब नाच - गाना सीखना है । oo सब हंसते हैं oo ५८४

लालमोहर: अच्छा दरबान जी, फिर मिलेंगे । फिर मिलेंगे । ५८५

दरबान: अच्छा, अच्छा । ५८६

०० तीनों साथ चलते हैं । ५८७

लालमोहर: क्या हुआ, हिरामन भाई? ५८८

हिरामन: अरे पास मिला है । ५८९

लालमोहर: देखूं । ५९०

हिरामन: हां... एक नहीं, पांच । देखो, सब अठन्निया दर्जा का । ५९१

लालमोहर: ज़रा दिखाओ न । ५९२

हिरामन: ०० हंसकर ०० सब का ध्यान रखती है । ५९३

धुन्नीराम: धन हो । ०० आवाज़: धन हो ०० ५९४

हिरामन: अरे कम्पनी की औरत की बात ही निराली है । ५९५

लालमोहर: हां, हां । होना ही चाहिये । लेकिन ये पांच पास लेकर होगा क्या? पलटदास तो पलटकर आया ही नहीं । ५९६

हिरामन: अरे जाने दो अभागे को । उसकी तक़दीर में लेला था ही नहीं । लेकिन सुनो, सबको कसम याद है न? ५९७

लालमोहर और धुन्नीराम: हां, हां । ५९८

हिरामन: गांव में उड़ती चिड़िया को भी ख़बर न हो । ५९९

लालमोहर: कौन साला बोलेगा । पलटे ने बदमाशी की तो उसकी काया नहीं । ६००

हिरामन: हां, तब ठीक है । ६०१

लालमोहर: धन हो । यह सब हीराबाई ने दिया है न? ६०२

हिरामन: अरे ख़ुद दिया है । ६०३

०० तीनों गाड़ियों के पास आते हैं । ६०४

लालमोहर: नगाड़ा बज रहा है, हिरामन भाई । ६०५

हिरामन: अरे नगाड़ा तो एक घंटे से बज रहा है, लालमोहर । हमको क्या फ़िकर है । हमारे पास तो पास हैं । मजे में जाएंगे । हैं? पर यहां कौन रहेगा? ६०६

लालमोहर: यहां कौन रहेगा? यह लहसनवा जो है । लहसनवा! ६०७

लहसनवा: ए मालिक, हमको नहीं ले जाएंगे क्या? ६०८

लालमोहर: सारा दिन ऐलानिया- पार्टी के पीछे घूमकर भी तेरा ६०६
पेट नहीं भरा? कामचोर कहीं का ।
00 हिरामन हंसता है 00

लहसनवा: हे मालिक, हाथ जोड़ता हूं । बस एक्को फलक । ६१०

हिरामन: अरे एक्को नहीं लहसनवा । तू चाहे तो घंटा भर बैठकर ६११
वहां देखो । हम तुम्हारी जगह यहां बासे पर आ जाएंगे ।

लहसनवा: बस बस बस । ६१२

00 नगाड़े की आवाज़ । पलटा गाड़ीवानों की ओर आ रहा
है । ६१३

पलटा: हिरामन । ओ हिरामन भाई । ६१४

हिरामन: हां पलटदास, कहां की लदनी ले के आए? ६१५

पलटा: अरे कुसूरवार हूं । जो सज़ा दो मंज़ूर है । लेकिन सच ६१६
बात यह है कि सिया सुकुमारी ...

हिरामन: देख पलटा, गांव- घर का ज़नाना मत समझना । तेरे ६१७
लिए भी पास दिया है । हां ।

पलटा: पास? ६१८

हिरामन: हां, यह देख । पांच अठन्निया, नहीं तो भीड़ देखी ६१९
वहां टिकट- घर के पास? हड्डी- पसली एक हो
जाती । हां ।

लालमोहर: लेकिन पलटा, याद रखना अगर गांव में किसी को पता चला ६२०
तो...

सब: हां, हां । ६२१

पलटा: अरे अरे .... जय सियाराम । जय सियाराम । जय ६२२
सियाराम ।

लालमोहर: चलो आओ आओ । चलो आओ । ६२३

00 टिकट- घर के आगे भीड़ है । लोगों के बीच रास्ता ६२४
निकालकर गाड़ीवान तम्बू के दरवाज़े की ओर जाते हैं ।

हिरामन: देखा? क्या भीड़ है टिकट- घर पर । हैं? पास हैं ६२५
ना, पास ।

टिकटचैकर: सुनिये, सुनिये । ये तो पास हैं । ६२६

हिरामन: हां । ६२७

टिकटचैकर: कहां से मार लाये? ६२८

हिरामन: अंय? ६२९

टिकटकैकर: अरे कहां से मारकर लाये ये पास? ६३०

हिरामन: जी यह अपनी कम्पनी से जाकर पूछो। चार नहीं, एक ठो और भी है। यह देखो। ६३१

टिकटकैकर: सो तो ठीक है। लेकिन लाये कहां से? ६३२

हिरामन: अरे वाह! ए सिपाही साहब जू। ६३३

बहादुर: क्या हुआ? क्या हुआ? ६३४

हिरामन: अंय? सवेरे पहचान करवाई, भूल गये क्या? ६३५

बहादुर: अरे ....हं ....अब याद आया, अब याद आया। क्या बात है? ६३६

हिरामन: यह अन्दर नहीं जाने दे रहा। ६३७

बहादुर: काहे न? ६३८

हिरामन: अरे यह कागज़ दिखाया तब भी नहीं मानता। ६३९

बहादुर: अरे पास है तो क्यों रोकता है? हीराबाई का आदमी है। जाने दो। हां। ६४०

टिकटकैकर: अच्छा, हीराबाई का आदमी है। अच्छा तो जाओ, जाओ जाओ। ६४१

हिरामन: आओ न आओ। अन्दर चलो। हां हां। ६४२

०० चारों गाड़ीवान अठन्निया दरवाज़े से तम्बू के भीतर जाते हैं। ६४३

एक दर्शक: अरे कहां घुसे जा रहे हो, भाई? ६४४

हिरामन: अरे भाई, थोड़ी जगह तो दो। ६४५

दर्शक: यहां जगह नहीं है, भाई। ६४६

हिरामन: अरे क्या हम लोग नहीं बैठेंगे क्या? हमारे पास पास है, टिकट नहीं। ६४७

दर्शक: पास है तो क्या सर पर बैठोगे? बड़े आये पासवाले। ६४८

हिरामन: अरे भाई..... ६४९

०० ढोल की आवाज़ और दर्शकों का शोर। ६५०

पलटा: अरे धन्य हो, धन्य हो। ए हिरामन भाई, ज़रा परदा तो देखो। रामबनगमन की छापी है। वह हैं सिरी राम और बीच में...आ हा हा हा ....सिया सुकुमरी और पीछे लखन लल्ला। और वह रहे हनुमान जी। ६५१

हिरामन: और इधर गरुड़ महाराज भी हैं । ६५२

लालमोहर: आ हा हा हा... ०० ढोल की आवाज़ ०० ६५३

हिरामन: ए लालमोहर, ये छापी सभी खड़ी है, या चल रही है? ६५४

लालमोहर: अरे खेला तो पर्दे के अन्दर है । अभी तो सिर्फ़ जमिनका दे रहा है । ६५५

हिरामन: आह ... ६५६

लालमोहर: लोग जमाने के लिए । ६५७

हिरामन: आह ... ६५८

०० पलटदास के पीछे बैठा दर्शक शराब के नशे में चूर है । पियक्कड़ की बोली में पलटे को कहता है: ६५९

शिवरतन: ए भाई ज़रा ठीक से बैठ । ६६०

सलटा: हां हां हां । आप सिंघिया गांव के हैं न ? ६६१

शिवरतन: हां । ६६२

पलटा: मोदीखाला? ६६३

शिवरतन: हां । ६६४

पलटा: धन्य हो । ६६५

शिवरतन: देखा, हमको सब कोई पहचानता है । हा ...हा ... हा ...। ए भाई । ६६६

पलटा: जी हां । ६६७

शिवरतन: तुम गाड़ीवान? ६६८

पलटा: हां हां । ६६९

शिवरतन: गाड़ीवान हो न? ६७०

पलटा: जी हां । ६७१

०० पलटा मुड़कर शिवरतनजी की ओर देखता है । उसे शराब की गंध आती है और वह नाक बंद कर लेता है । ६७२

पलटा: ऊह ६७३

शिवरतन: मैं कहा ....मैं कहा वही बात हुई । देसी है । हम बिलायती गड़बड़ में बिल्कुल नहीं है । ०० कुछ लोग हंसते हैं ०० ६७४

00 00 00 00

00 मैनेजर अठन्निया दरवाज़े के पास खड़ा है । ६७५

मैनेजर: 00 किसी दर्शक से 00 नमस्ते जी, नमस्ते जी । ६७६

00 अब वर्दी पहने दरोगा साहब अन्दर आते हैं । ६७७

मैनेजर: आइये, आइये दरोगा साहब । तशरीफ़ लाइये । ६७८
आप उस सोफ़े पर बैठिये । 00 इशारा करता है 00

धुन्नीराम: सब दरजों से अच्छा अठन्निया दरजा । ६७९

पलटा: सबसे पीछे और सबसे ऊंचे । ६८०

हिरामन: हूं । ये कुरसी - बैंच वाले हैं ना? इस सर्दी में अभी ६८१
घुच- घुच करके उठेंगे चाय पीने ।

00 हिरामन और उसके दोस्त हंसते हैं । ढोल आदि का शोर । ६८२
कोई सज्जन सामने की कुर्सी की ओर आते हैं । कई दर्शक
उठकर उन्हें नमस्कार करते हैं ।

लालमोहर: वह फूलमालावाले को देखते हो ना, वह रामनगर ६८३
के छोटे तरफ़ के ज़मींदार हैं, बिक्रमसिंह ।

हिरामन: अच्छा । ६८४

लालमोहर: हूं । ६८५

शिवरतन: ए भाई मिशे । ६८६

मिशे: हां । ६८७

शिवरतन: लगता है, खेला शुरू होने में अभी देर है । तब तक एक ६८८
नींद ले लें ।

मिशे: हां हां, सो जाओ । खेला सपने में देख लेना । ६८९

शिवरतन: ख़बरदार । खेला शुरू होने पर .... नहीं, नहीं, ६९०
जब वह हिरिया स्टेज पर उतरेगी न, तब हमको
जगा देना ।

मिशे: हां, हां, सो जाओ । ६९१

हिरामन: 00 लालमोहर से 00 इस आदमी से ज़्यादा ६९२
बतियाने की ज़रूरत नहीं । लटपटिया मालूम होता है ।
सुना नहीं, अभी क्या कहा था उसने ।

पलटा: पुराना शराबी - कबाबी मालूम होता है । ६९३

हिरामन: 00 सीटी की आवाज़ सुनकर 00 अ ...ह ...ह ... ६९४
सीटी बजा ।

पलटा: हा ... हा ... हा । ६६५

०० हीराबाई स्टेज पर आती है । पायल और घुंघरू की आवाज़ । ६६६

हिरामन: मीता । ६६७

०० हीराबाई का नाच । ६६८

हीराबाई: पान खाये सैंय्या हमारो, ६६९
सांवली सूरतिया होंठ लाल लाल ।
हाय हाय मलमल का कुरता,
मलमल के कुरते पे छींटे लाल लाल ।
पान खाये सैंय्या हमारो ।

हमने मंगाई सुरमेदानी, ७००
ले आया ज़ालिम बनारस का ज़रदा ।
आ ० ० ० ० ० हमने मंगाई सुरमेदानी,
ले आया ज़ालिम बनारस का ज़रदा ।
आ ० ० ० ० ० अपनी ही दुनिया में सोया रहे वह,
हमरे जी की न पूछे बेदर्दी पूछे बेदर्दी ।

पान खाये सैंय्या हमारो, ७०१
होय होय सांवली सूरतिया होंठ लाल लाल ।
हाय हाय मलमल का कुरता,

हं हं मलमल के कुरते पे छींटे लाल लाल ।
पान खाये सैंय्या हमारो ।

बगिया गुन्गुन पायल झुनझुन, ७०२
चुपके से आई है ऋतु मतवाली ।
बगिया गुन्गुन पायल झुनझुन,
चुपके से आई है ऋतु मतवाली ।
आ० ० ० खिल गईं कलियां दुनिया जाने,
लेकिन न जाने बगिया का माली, बगिया का माली ।

पान खाये सैंय्या हमारो, ७०३
सांवली सूरतिया होंठ लाल लाल ।
हाय हाय मलमल का कुरता,
मलमल के कुरते पे छींटे लाल लाल
पान खाये सैंय्या हमारो ।

सा के गिलौरी शाम से ऊंघे, ७०४
सो जाए वह दिया - बाती से पहले ।
सा के गिलौरी शाम से ऊंघे,
सो जाए वह दिया - बाती से पहले ।
आ ० ० आंगन सारे में घबराई डोलूं,
चोरी के डर से दिल मोरा दहले, दिल मोरा दहले ।

पान खाये सैंय्या हमारो, ७०५
सांवली सूरतिया होंठ लाल लाल ।

हाय हाय मलमल का कुरता,
हं हं मलमल के कुरते पे छींटे लाल लाल।
पान खाये सैंयां हमारो।

00 तालियों और सीटियों की आवाज़। ७०६

शिवरतन: वाह! वाह! क्या कमाल नाचती है! कमाल। ७०७

एक दर्शक: वाह! वाह! क्या गला पाया है! सुना है ७०८
पान, बीड़ी, ज़र्दा कुछ भी नहीं लेती।

शिवरतन: क्या बात है! क्या बात है! बड़ी नेमवाली रंडी है! ७०९

पहला दर्शक: लेकिन दांत में मिस्सी कहां? ७१०

शिवरतन: पौड़र से दांत धो लेती होगी। बड़ी चालाक रंडी है। ७११
हा ... हा ... 00 हंसता है 00

हिरामन: क्या बचर बचर कर रहे हो? बतियाने की भी तमीज़ ७१२
नहीं है? कम्पनी की बाई को रंडी बोलते हो।

शिवरतन: हां बोलता हूं। सौ बार बोलूंगा। तुम कौन होते हो? ७१३

हिरामन: तेरी ज़बान खैंच लूंगा। ७१४

शिवरतन: अरे जा जा रंडी के भाई। ७१५

00 हिरामन शिवरतन पर टूट पड़ता है। लड़ाई का शोर। ७१६
दरोगा लड़ाई को बन्द करता है।

दरोगा: चल साला गाड़ीवान, मारपीट करता है। ७१७

हिरामन: दरोगा हुज़ूर, आप मारना है, तो मारिये। ज़रूर ७१८
मारिये। कोई हरजा नहीं है। लेकिन पहले यह देख
लीजिये। यह देखिये साहब। यह पास है, यह पास है
साहब। टिकट नहीं, पास।

दरोगा: बदमाश। गुंडे। चल। ७१९

हिरामन: दरोगा हुज़ूर, हम गुंडा नहीं हैं। यह पास हमको कम्पनी ७२०
ने दिया है। और फिर कम्पनी की औरत की कोई
बुराई करेगा तो हम छोड़ देंगे उसे?

मैनेजर: 00 दरोगा से 00 हां हुज़ूर, मैं सब समझ गया। यह ७२१
दूसरी कम्पनीवालों ने मेरी बेइज़्ज़ती करने के लिए सब कुछ
किया है।

मैनेजर: 00 हिरामन आदि से 00 अरे, आओ भाई आओ। ७२२
आगे तुमने मेरी घास ख़राब कर दी है।

अरे बहादुर, अरे इन लोगों को आगे बिठा दो।

00 अठन्निया स्थान को छोड़कर गाड़ीवान स्कटकिया कुर्सियों की ७२३

और जाते हैं ।

पीछे से आवाज़: बैठ जा....बैठ जा....बैठो.... ७२४

बहादुर: बैठ जा यहां, बैठ । ७२५

हिरामन: हं ...हं ...स्कटकिया है,ना? ७२६

०० इसी बीच लहसनवा स्कटकिया दरवाज़े के पास आता है । ७२७

टिकटचैकर: अरे ...अरे ... अरे टिकट कहां है? ७२८

लहसनवा: जी, टिकट नहीं, पास है पास । ७२९

टिकटचैकर: तो हुज़ूर पास ही दिखा दीजिये । ७३०

लहसनवा: वह हमार मालिक के पास है । ७३१

टिकटचैकर: कहां है तुम्हारा मालिक? ७३२

लहसनवा: ए लालमोहर मालिक । देखो जाने नहीं देता । ७३३

हिरामन और
लालमोहर: पास है, पास । ७३४

टिकटचैकर: ओह, अच्छा, अच्छा । ७३५

लहसनवा: ए टिकटवा, फाटक किधर है? ७३६

टिकटचैकर: यहां से घुसो और यहां से निकलो । ०० वह ७३७
लहसनवा को अन्दर आने का ठीक रास्ता दिखाता है ।

लहसनवा: ए लालमोहर मालिक, कौन आदमी है वह? धुन्नी ७३८
मालिक ने मुझे सब कुछ बता दिया । ज़रा और कुछ नहीं
तो मुझे सकल तो दिखा दीजिये ।

दरोगा: अरे, बैठ जा यहां, बैठ । ७३९

०० पलटदास हाथ जोड़कर दरोगा से कहना चाहता है कि ७४०
दरोगाजी लहसनवा के जोश को माफ़ करें ।

पलटा: ए माई - बाप । ७४१

०० संगीत ०० ७४२

हिरामन: कोई बुरा - भला कहे तो? हैं ? ज़रा सोचो तो? ७४३
अरे धुन्नी को लगी है न ?
अभी आता हूं । हीराबाई ने बुलाया है ।
०० उठकर वह हीराबाई के तम्बू में जाता है ००

नौकर: बाई जी, आपका आदमी आ गया । ७४४

हीराबाई: अन्दर भेज दो । ७४५

हीराबाई: ०० हिरामन से ०० मारपीट क्यों कर रहे थे? ७४६

हिरामन: जी ? ७४७

हीराबाई: मारपीट क्यों कर रहे थे? ७४८

हिरामन: वे लोग आपको गाली दे रहे थे । ७४९

हीराबाई: गाली दे रहे थे तो क्या हुआ ? ७५०

हिरामन: हैं ? ७५१

हीराबाई: कोई गाली दे, कुछ कहे, तुम्हें बीच में आने की क्या ज़रूरत है ? ७५२

हिरामन: वे आपको ... आपको ... ७५३

हीराबाई: क्या आपको ? ७५४

हिरामन: आपको ... रंडी ... गन्दी बात कह रहे थे । ७५५

हीराबाई: तुम क्या दुनियावालों के मुंह पे ताले लगाते फिरोगे ? ७५६

हिरामन: कोई आपके बारे में अगर कुछ कहेगा तो फिर ... ७५७

हीराबाई: जिसके जो जी में आये कहने दो और फिर मेरे लिए मारपीट करनेवाले तुम होते कौन हो? क्या हक है तुम्हें? ७५८

०० हीराबाई तेज़ी से तम्बू के बाहर जाती है । हिरामन कुछ देर हठात खड़ा रहता है । फिर बाहर जाकर किसी पेड़ के सहारे बैठ जाता है । सितार का दर्द-भरा संगीत । ७५९

पलटा: हिरामन भाई! ओ हिरामन! हिरामन! अरे चलो, चलो । देखो धुन्नी को न जाने क्या हो गया । ७६०

हिरामन: हैं ? ७६१

पलटा: अरे चलो, उठो । ७६२

०० पलटा हिरामन का हाथ पकड़कर उसे गाड़ियों के पास ले जाता है । धुन्नी गाड़ी पर लेटा कराह रहा है । ७६३

धुन्नीराम: ०० बुखार में ०० हीराबाइन ... न ... ७६४

लालमोहर: धुनिया! ७६५

धुन्नीराम: जिसकी एक अदा पर लाखों ७६६

लालमोहर: धुनिया! ७६७

धुन्नीराम: तख्तहज़ारा ७६८

पलटा: जय सीतामाई की । ७६६

धुन्नीराम: तस्तहज़ारा ..... जन्नत की हूर ७७०

हिरामन: धुनिया। ७७१

पलटा और हिरामन: धुनिया। ७७२

धुन्नीराम: लरा ... लरा ... ले ... ल ... ल ... हीराबाई... ओ हीराबाई ७७३

हिरामन: ओ लहसनवा, बड़े ज़ोर का बुख़ार है । पानी ले के आ । ७७४

पलटा: तल्लथा बुख़ार है । ७७५

धुन्नीराम: हीराबाई ... हीराबाई ७७६

लहसनवा: यह लो मालिक, यह लो पानी । ७७७

पलटा: जय सीता मैय्या, जय स्ति मैय्या, जय सीता मैय्या, जय सीता मैय्या । ७७८

हिरामन: धुनिया । अरे ओ धुनिया! ७७९

पलटा: जय सीता मैय्या, जय सीता मैय्या । ७८०

हिरामन: लालमोहर, सवेरे एके गांव ले जाओ । हां? ७८१

oo अगले दिन । सवेरे । धुन्नी को गाड़ी पर लिटाकर गांव भेजा जा रहा है । ७८२

हिरामन: oo गाड़ीवाले से oo संभालना मैय्या, बुख़ार बहुत तेज़ है । हां? जाओ ले जाओ । ७८३

oo oo oo oo

oo एक टोपीवाला आदमी गाड़ी माड़ा करना चाहता है । ७८४

एक आदमी: अरे भाई, माड़ा जाओगे? ७८५

हिरामन: कहां जाना है? ७८६

आदमी: कुल्मा गांव । ७८७

लालमोहर: कुल्मा गांव? वह तो आना-जाना पन्द्रह कोस होगा । नहीं, मैय्या नहीं । हमसे से कोई नहीं ७८८

पलटा: हां । ७८९

हिरामन: मैं जाऊंगा । ७९०

पलटा: लेकिन हिरामन, वह ..... वह नौटंकी ? ७९१

हिरामन: भाड़ा क्या दोगे ? ७९२

आदमी: बीस रुपया । और कितना ? ७९३

हिरामन: बस तो ठीक है । लेकिन सुनो, चोरी - चकारी का माल तो नहीं है ? ७९४

आदमी: अरे नहीं, नहीं । ७९५

हिरामन: और बांस की लग्गी भी नहीं लूंगा । ७९६

आदमी: अरे बाबा, मकई है । ७९७

हिरामन: आओ गाड़ी में । ७९८

पलटा: लेकिन आज रात को सेला पर नहीं जाओगे ? ७९९

०० हिरामन जवाब दिये बिना टोपीवाले के साथ चला जाता है । ८००

लालमोहर: क्या हो गया हिरामन को? ८०१

पलटा: लगता है यह भी चरण सेवा करने को गया होगा । ८०२

लालमोहर: क्या ... क्या ? हैं ? ८०३

पलटा: हं ... हं ... कुछ नहीं, कुछ नहीं । ८०४

०० ०० ०० ००

०० लालमोहर और पलटा मेले के बीच टहल रहे हैं । ८०५

पलटा: अरे लालमोहर! ८०६

लालमोहर: हां । ८०७

पलटा: अरे अब क्या होगा ? हिरामन भाई तो आए नहीं । और सेला शुरू होनेवाला है । ८०८

लालमोहर: चलो हम लोग चलते हैं । हिरामन आएगा, तो आ ही जाएगा । तुम चलो मैं ज़रा पान ले के आता हूं । जाओ ।

०० पानवाले से ०० अरे भैय्या, ज़रा दो ज़ाफ़रानी पान लगाना । ज़रा जल्दी देना । ८०९

०० लहसनवा पानवाले की दुकान के पास गुज़रता है । ८१०

लहसनवा: ... अरे पता नहीं देना बाबू ..... क़सम ..... काहे सरमिया होय ..... पत ८११

लालमोहर: अरे कहां रहा तू सारा दिन ? ८१२

लहसनवा: अरे लालमोहर मालिक आप। वह बात यह हो गई, मालिक, कि वह अपने जोकर साहब हैं न। वह सारा दिन मेले में घुमाते रहे। अरे छोड़ा ही नहीं। ८१३

लालमोहर: तेरे जोकर की ऐसी की तैसी। सूअर। नमकहराम। ८१४

लहसनवा: देखिये मालिक, गाली मत दीजिये। हां। ८१५

लालमोहर: लगाऊं एक झापड़? तबियत हरी हो जाएगी। ८१६

लहसनवा: हां, मार के तो देखो ज़रा। ८१७

लालमोहर: अरे आंखें दिखाता है ऊपर से। लात मारकर निकाल दूंगा नौकरी से। हां ... हां ... चल चल निकल जा अभी। ८१८

लहसनवा: हां, हां निकाल दीजिये न। यहां किसे चाहिये आपकी नौकरी। अरे जोकर साहब ने मुझे आपसे अच्छा काम दे दिया है कम्पनी में। चल, निकल। हत्र! ८१९
०० लहसनवा जाता है ००

लालमोहर: देखा नमकहराम को। ८२०

00 00 00 00

00 स्टेज पर हीराबाई गाती है। ८२१

गाना:
मारे गये गुलफ़ाम, अजी हां मारे गये गुलफ़ाम। ८२२
मारे गये गुलफ़ाम, अजी हां मारे गये गुलफ़ाम।
उल्फ़त भी रास न आई, अजी हां मारे गये गुलफ़ाम।

अधरों की कटारी से, नैनों की दो धारी से ८२३
वह हो के रहे ज़ख्मी, इक बादे बहारी से
वह हो के रहे ज़ख्मी, इक बादे बहारी से
इक बादे बहारी से।
यह ज़ुल्फ़ क्यूं लहराई, अजी हां मारे गये गुलफ़ाम।
मारे गये गुलफ़ाम, अजी हां मारे गये गुलफ़ाम।

इस प्यार की महफ़िल में, वह आये मुक़ाबिल में। ८२४
वह तीर चले दिल पर, हलचल सी हुई दिल में
वह तीर चले दिल पर, हलचल सी हुई दिल में
हलचल सी हुई दिल में

चाहत की सज़ा पाई, अजी हां मारे गये गुलफ़ाम। ८२६
मारे गये गुल फ़ाम, अजी हां मारे गये गुलफ़ाम।
उल्फ़त भी रास न आई, अजी हां मारे गये गुलफ़ाम।

00 लालमोहर और पलटा दर्शकों के बीच बैठे हैं। ८२७

लालमोहरः अरे पलटा, देखा मेरी ओर कैसी नज़र से देख रही थी। ८२८

पलटा: तुम्हरी तरफ़? ८२९

लालमोहर: हां । ८३०

पलटा: कौन? ८३१

लालमोहर: अरे हीराबाई । अब समझ गई है मेरा पावर ८३२
हिरामन से ज्यास्ती है । हं ... हं ...
०० वह अपनी मूंछें ऐंठता है ००

०० हीराबाई का नौकर आता है ०० ८३३

नौकर: अरे भाई, हीराबाई बुला रही है । ८३४

पलटा: किसको? ८३५

लालमोहर: अरे और किसको? देखा पावर । ८३६

०० लालमोहर नौकर के साथ जाता है । हीराबाई चेहरे पर ८३७
पाउडर लगा रही है ।

लालमोहर: जी मैं हाज़िर हूं । ८३८

हीराबाई: कौन ? अन्दर आ जाओ । ८३९

लालमोहर: ह ... ह ... ह ... ह ... ग़ज़ब का गुण, गुलफ़ाम । ८४०
कमाल का ग़ज़ब कर दिया । ह ... ह ...

हीराबाई: कौन हो तुम? ८४१

लालमोहर: जी? पहचाना नहीं? आपने बुलाया था न? ८४२

हीराबाई: ओह । तुम हिरामन के साथी हो? ८४३

लालमोहर: जी । जी मैं लालमोहर । ८४४

हीराबाई: आज हिरामन क्यों नहीं आया? ८४५

लालमोहर: अभागा है । गया होगा कहीं पैसा कमाने । वह नालायक़ ८४६
क्या समझे आपकी अदाकारी ।
हे ... हे ... मैं तो जान ... फ़रमाइये?

हीराबाई: तुम जा सकते हो । ८४७

लालमोहर: जी? ८४८

हीराबाई: फ़रमा रही हूं, तुम जा सकते हो । ८४९

०० लालमोहर बाहर जाता है । जोकर की आवाज़ आती है । ८५०

जोकर: अबे ओ मुर्गे । ८५१

लहसन्वा: जी हुज़ूर । ८५२

जोकर: कहां मर गया था ? ८५३

लहसनवा: जी खेला देख रहा था । ८५४

जोकर: हं ... हं ... हं ... शुरू होजा । चम्पी कर । ८५५

लहसनवा: उस्ताद चमेली लगाऊं ? केवड़ा लगाऊं ? ८५६

जोकर: गैंदा लगा, गैंदा । ८५७

लहसनवा: गैंदा हैं...हैं ०० हंसता है ०० गैंदा । ८५७'

०० ०० ०० ००

०० नाच की प्रैक्टिस । तबला, हारमोनियम और आलाप के बोल । हीराबाई प्रैक्टिस कर रही है । ८५८

उस्ताद: धा धिक धिक धई, धा धिक धिक धई । ८५९
धा धिक धिक धई, धा धिक धिक धई ।
धा धिक धिक धई, धा धिक धिक धई ।

हां, ज़रा 'कहरवा' लेना ।
०० संगीत ००
तीन ताल में, ज़रा बढ़ा के ।
०० संगीत और तबले का ताल ००

हीराबाई: बस मास्टर जी । ८६०

उस्ताद: क्या हुआ बिटिया, बहुत अच्छा हो रहा है । ८६१

हीराबाई: नहीं मास्टर जी, बस आज यहीं तक । ८६२

उस्ताद: चल नजमा, तू आ जा । बिटिया, जा तू आराम कर । ८६३

नजमा: बैठो न आपा जी । मैंने कैसे तैयार किया है, देखोगी नहीं ? ८६४

हीराबाई: नहीं, नहीं नजमा । आज कुछ अच्छा नहीं लगता । ८६५

नजमा: कल तुम नाचोगी तो मैं भी चली जाऊंगी । ८६६

०० ०० ०० ००

०० लहसनवा नौटंकी वालों के धुले कपड़े सूखने को पसार रहा है । ८६७

हीराबाई: लहसनवा । ८६८

लहसनवा: जी मालकिन । ८६९

हीराबाई: ज़रा इधर आ । ८७०

लहसनवा: अभी आया, मालकिन । ८७१

०० कोई औरत कपड़ों की एक ओर बाल्टी लाती है । लहसनवा उसे फटकारता है: ८७२

लहसनवा: हट ।

00 हीराबाई के तम्बू में आता है । हीराबाई खाट पर बैठी है ।

लहसनवा: जी मालकिन ।

हीराबाई: सुन ध्यर । हिरामन के पास जा एक बार । कहना हीराबाई ने बुलाया है ।

लहसनवा : बहुत अच्छा, मालकिन ।

00 लहसनवा के जाने के बाद हीराबाई खाट पर लेट जाती है । उसे हिरामन की बातें याद आती हैं ।

हिरामन: आपको ... रंडी ... गन्दी बात कह रहे थे ।

हीराबाई: तुम क्या दुनियावालों के मुंह पे ताले लगाते फिरोगे?

हिरामन: कोई आपके बारे में अगर कुछ कहेगा तो फिर ...

हीराबाई: जिसके जो जी में आए कहने दो और फिर मेरे लिए मारपीट करनेवाले तुम होते कौन हो? क्या हक़ है तुम्हें? ओह ।

00 हीराबाई करवट बदलती है । नजमा साड़ी से मुंह पोंछती

तम्बू के अन्दर आती है ।

नजमा: अप्पा, ओ अप्पा ।

हीराबाई: हूं ।

नजमा: हूं क्या? किसकी याद में सोई हुई हो?

हीराबाई: किसकी याद में सोऊंगी मैं?

नजमा: लगता है किसी मजनूं की याद में सो गई है लैला जान ।

हीराबाई: नहीं नजमा । हम हमेशा लैला का पार्ट ही अदा करेंगे । लैला कभी बन नहीं सकेंगे ।

नजमा: एक बात पूछूं आपा? क्या हो गया है तुम्हें आजकल?

हीराबाई: कुछ नहीं । 00 हीराबाई आंसू नीचे कर लेती है 00

00 00 00 00

00 गाड़ीवानों का पड़ाव ।

लहसनवा: हिरामन मालिक ।

हिरामन: हूं?

लहसनवा: कम्पनी आपको बुलाई है । ८९५

हिरामन: कौन? ८९६

लहसनवा: हीराबाई । आपको बहुत याद कर रही हैं । और बोली ८९७
हैं कि अभी आकर मिल जाएं । बहुत ज़रूरी काम है ।
ह ... ह ... ह ... अ ... कम्पनी में मुझे नौकरी
मिल गई है, मालिक । आपके इक़बाल से बड़े मज़े में
हूं । और मालिक, जोकर साहब तो इतना हंसाते हैं,
इतना हंसाते हैं कि हंसते हंसते, मालिक, पेट दुखने
लग जाता है । हीराबाई की साड़ी धोने के बाद,
कठौते का पानी अतर - गुलाब हो जाता है और फिर
मैं उसमें अपनी कमीज़ डुबा देता हूं ।

00 लहसनवा अपनी कमीज़ सूंघता है । फिर हिरामन के ८९८
आगे बढ़ाता है ।

लहसनवा: सूंघोगे, मालिक? ८९९

हिरामन: हूं . . . ९००

लहसनवा: तो फिर आप ज़रूर आ रहे हैं न, मालिक? ९०१

हिरामन: कहना आवेंगे । ९०२

लहसनवा: अच्छा । ९०३

00 00 00 00

00 हीराबाई का तम्बू । हीराबाई कढ़ाई में कुछ पका रही है । ९०४

हीराबाई: अन्दर आओ, हिरामन । बैठो, बैठो न । ९०५
00 हिरामन खड़े रहता है 00
देखती हूं तुम्हारा गुस्सा अभी उतरा नहीं ।

हिरामन: जी मैं कौन हूं गुस्सा करनेवाला । मेरा हक़ ही क्या है? ९०६

हीराबाई: ऐसा न कहो हिरामन । तुम मेरे मीता हो न? ९०७

हिरामन: वह अब रहने दीजिये । ९०८

हीराबाई: इतने नाराज़ हो? उस दिन मुझे सचमुच बहुत गुस्सा आ ९०९
गया था और गुस्से में न जाने क्या अनाप-शनाप बक गई ।
और तुम्हारा गुस्सा भी इतना तेज़ है, यह क्या मालूम
था मुझे ।

00 हीराबाई लोटे से कढ़ाई में पानी ढालती है । ९१०

हीराबाई: लो अब सारा गुस्सा पानी हो गया । हो गया न? ९११
हुआ कि नहीं? बैठोगे नहीं? क्यूं बैठोगे, मैं
तुम्हारी कौन होती हूं? लोग मेरी अदाकारी देखते हैं
लेकिन मेरे मन की पीड़ को कोई क्या जाने? सीरा
ककड़ी तो हूं नहीं जो कलेजा फाड़ के दिखला दूं । इच्छा

थी तुम्हें अपने हाथ से पका के खिलाऊं । मगर तुम बैठोगे नहीं तो ...

हिरामन: बैठूंगा क्यों नहीं ? और खाऊंगा भी । लेकिन आपको किसी ने बुरा कहा तो ... ६१२

०० बाहर ढोलक की आवाज़ । हिरामन गाना सुनने लगता है । ६१३

हीराबाई: आज रात खेल देखने आओगे न? ६१४

हिरामन: ०० चौंककर ०० है ... है? हां, हां । ६१५

हीराबाई: आज लैला - मजनूं होगा । लैला- मजनूं का क़िस्सा जानते हो न? ६१६

हिरामन: जानता हूं । लैला- मजनूं उर्फ़ मकतब की मुहब्बत । ६१७

हीराबाई: आज मैं लैला बनूंगी । ६१८

हिरामन: और मजनूं? ६१९

हीराबाई: है कोई । ज़रूर आना । मारपीट करने नहीं, खेल देखने । ६२०

हिरामन: कोई आपकी बुराई करे तो? ६२१

हीराबाई: तुम ज़रा जल्दी आ जाना । स्टेज पर बैठने का इंतज़ाम कर दूंगी तुम्हारा । ६२२

हिरामन: एक ... एक बात है । ग़ुस्सा तो नहीं कीजिएगा? ६२३

हीराबाई: नहीं, बोलो । ६२४

हिरामन: बात यह है मेले में चोर पाकेटमार बहुत आते हैं । ६२५

हीराबाई: सो तो आते हैं, फिर? ६२६

हिरामन: और देखिये मैं बहुत ग़रीब आदमी हूं । थोड़ा- सा रुपया है । ०० हीराबाई को बटुआ देता है ०० आप संभालकर रख लीजिये तो ... ६२७

हीराबाई: ०० बटुआ को लेकर ०० अगर मैं मार लूं तो? ६२८

हिरामन: हस्स । ६२९

हीराबाई: ०० बक्से में रख देती है ०० लो, बैक में रख दिया । जब जी चाहे ले जाना । हां ? ६३०

हिरामन: खाने में देर है क्या? ६३१

हीराबाई: नहीं, अभी हो जाएगा । ६३२

oo oo oo oo

oo नौटंकी की स्टेज । पर्दा ऊपर उठता है । ६३३

गाना: क़िस्सा होता है शुरू पाक इश्क़ रंगीन । ६३४
नाम अमीर दमिश्क़ के थे एक तख़्तनशीन ।

oo ढोल की आवाज़ । ६३५

गाना: नेक नशर थे शाह और रैय्यत पर नेक नज़र थी । ६३६
नेक नशर थे शाह और रैय्यत पर नेक नज़र थी ।
था एक क़ैस पिसर अज़हद उल्फ़त जिसके ऊपर थी ।
थे सुलतां सरदार, एक सुल्तानी शहर थी ।

oo हीराबाई और हिरामन पर्दे के बग़ल में कुर्सी पर बैठे ६३७
खेल देख रहे हैं ।

गाना: उनके नाज़ों की पाली, प्यारी लैला दुख़्तर थी । ६३८
कहूं क्या इश्क़बाज़ी का निराला ही अफ़साना था ।
कहूं क्या इश्क़बाज़ी का निराला ही अफ़साना था ।
अल्हड़पन में वे दोनों, लड़कपन का ज़माना था ।
आ के मकतब में आपस में ताक और झांक रहती थी ।
यही था शग़ल रोज़ाना तो पढ़ने का बहाना था ।

दिली उल्फ़त थी दो जानिब, न एक तरफ़ा मुहब्बत थी । ६३९
फ़िदा थी क़ैस पर लैला, वह लैला पर दीवाना था ।

अजी एक बात थी यह हैरत-अंगेज़ थी कैसी ।
मिज़ाजे क़ैस बचपन ही से यारो आशिक़ाना था ।

oo लोग तालियां बजाते हैं । लैला अब स्टेज पर आती है । ६४०

लैला: मैं सुनाती हूं इक माजरा अजब ६४१
क़ैस तुमसे है बिल्कुल शरम ही नहीं
है मुहब्बत बहुत कुछ ही तुमसे मुझे
फ़र्क़ इसमें तुम्हारी क़सम ही नहीं
है मुहब्बत बहुत कुछ ही तुमसे मुझे ।

क़ैस: तेरी बांकी अदा पे मैं खुद हूं फ़िदा ६४२
अपनी चाहत का दिलबर बयां क्या करूं
ये ही ख़्वाहिश है तुम मुझको देखा करो
ये ही ख़्वाहिश है तुम मुझको देखा करो
और दिलोजानी मैं तुमको देखा करूं
ये ही ख़्वाहिश है तुम मुझको देखा करो ।

लैला: क्या हक़ीक़त जुदाई की ज़ाहिर करूं ६४३
बड़ी मुझको भी जो बेक़रारी रहे
भूलती याद पल को भूलती
मेरी आंखों में सूरत तुम्हारी रहे
भूलती याद पल को नहीं भूलती
यार अर्ज़ मेरी तुमसे है माहे कनआन

क़ैस: दिल लगा के न दिल को हटा लेना तुम ६४४

बेवफ़ाई न करना कभी भूल कर के
बेवफ़ाई न करना कभी भूल कर के
पर मुहब्बत का वादा निभा देना तुम
बेवफ़ाई न करना कभी भूल कर के ।

oo तालियां । ज़मींदार विक्रमसिंह हीराबाई की ओर चमेली ६४५
की माला फैंकते हैं ।

oo oo oo oo

oo हिरामन नौटंकी के तम्बू के पास से जा रहा है । बहादुर ६४६
उससे बात करता है ।

बहादुर: क्यों हिरामन, सब अच्छा है न? ६४७

हिरामन: हां, हां, सब अच्छा है । खाओ । ६४८

oo हिरामन टिकट बाबू की खिड़की पर आकर उन्हें राम राम ६४९
कहता है ।

हिरामन: टिकट बाबू, राम राम । ६५०

टिकट बाबू: राम राम, माई । ६५१

हिरामन: राम राम । ६५१'

oo oo oo oo

oo हीराबाई अपने तम्बू के सामने बैठी है । ६५२

उस्ताद: बिटिया, 'हाय ग़ज़ब टूटा तारा' एक बार फिर ६५३
रिहर्सल कर लेना चाहिये । हैं ?

हीराबाई: अच्छा मास्टर जी । ६५४

मास्टर जी: जीती रहो, जीती रहो । ६५५

oo हिरामन आता है । ६५६

हीराबाई: आओ हिरामन, बैठो । आजकल कामकाज कैसा चल ६५७
रहा है ?

हिरामन: जी सब ठीक है । ६५८

हीराबाई: आज रात नौटंकी आ रहे हो न ? ६५९

हिरामन: हं ... जी । ६६०

हीराबाई: मेरा काम कैसा लगता है ? मतुवा - नटुवा दिखती हूं न ? ६६१

हिरामन: इस्स । मतुवा - नटुवा से तो आप कहीं अच्छा काम करती ६६२
हैं । ऐसा काम हमने ज़िन्दगी में कभी नहीं देखा ।

हीराबाई: आज कोई काम नहीं है ? ६६३

हिरामन: जी, काम तो ज़िन्दगी भर लगा ही रहेगा। ६६४

हीराबाई: इसीलिए सब कुछ बन्द कर रक्खा है, क्यों? ६६५

हिरामन: जी, करूँगा, थोड़े दिन बाद से। ६६६

हीराबाई: अपने काम से जी नहीं चुराना चाहिये। सोचते हो यहां कोई कुछ कहनेवाला नहीं है? देखो मीता, अपना काम छोड़ के यहां आओगे न, तो मैं बहुत नाराज़ होऊंगी। ६६७

हिरामन: इस्स। आप नाराज़ न होइये। मैं अभी चला जाता हूं। ६६८

हीराबाई: रात को नौटंकी में आना। ६६९

हिरामन: जी। ६७०

00 00 00 00

00 मेले के दृश्य। हिरामन बहुत खुश है। नाई से दाढ़ी बनवाता है। ६७१

00 00 00 00

00 हीराबाई और उसकी सहेलियों का नाच। ६७२

गाना: हाय, गज़ब कहीं तारा टूटा ६७३

हाय, गज़ब कहीं तारा टूटा
लूटा रे लूटा मेरे सैय्यां ने लूटा
हाय, गज़ब कहीं तारा टूटा
लूटा रे लूटा मेरे सैय्यां ने लूटा
हाय, गज़ब कहीं तारा टूटा।

पहला तारा अटरिया पे टूटा ६७४
पहला तारा अटरिया पे टूटा
दांतों तले मैंने दाबा अंगूठा
दांतों तले मैंने दाबा अंगूठा
लूटा रे लूटा सांवरिया ने लूटा
आ ८ ८ ८ ८ ८ 00 आलाप 00
हाय, गज़ब कहीं तारा टूटा
लूटा रे लूटा मेरे सैय्यां ने लूटा
हाय, गज़ब कहीं तारा टूटा।

00 सारे दर्शक गाने से खुश हैं। ज़मींदार विक्रमसिंह के हाथ में सौटकिया का नोट है। उसकी ओर हीराबाई का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। हिरामन हीराबाई के लिए चमेली की माला लाया है। ६७५

गाना: दूसरा तारा बजरिया में टूटा ६७६
दूसरा तारा बजरिया में टूटा
देखा है सबने कि मेला-सा छूटा
देखा है सबने कि मेला-सा छूटा
लूटा रे लूटा मेरे सैय्यां ने लूटा।

आवाज़: दिलोजान ... ९७७

oo ज़मींदार दर्शकों के बीच से उठकर हीराबाई के तम्बू की ओर जाते हैं । हिरामन उनका पीछा करता है । ९७८

ज़मींदार: क्यों, काम बना? ९७९

बिरजू: नहीं, इतनी रात गये मिलना ठीक नहीं होगा । ९८०

ज़मींदार: क्यों? ९८१

बिरजू: अ ... अ ... उसके मिज़ाज का कोई ठिकाना नहीं है । अगर वह बिगड़ गई तो किये - कराये काम पर पानी फिर जाएगा । आप ज़रा सब्र कीजिये । ९८२

ज़मींदार: सब्र की हद हो गई । ये ले दस रुपये ले । फट करा दे । बाक़ी बाद में दूंगा । हैं? ९८३

बिरजू: हं ... हं ... वैसे तो मैं हुज़ूर के हुक्म का ग़ुलाम हूं । आप कल सुबह दस बजे आ जाइये । अगर हीराबाई से न मिलवा दिया तो मेरा नाम नहीं । हां । ९८४

ज़मींदार: ठीक है । दस बजे पक्का । हैं? ९८५

बिरजू: बिल्कुल पक्का । ९८६

oo कोई गाता हुआ जाता है: "दिलोजान मैं तुमको देखा करूं" ९८७

oo oo oo oo

oo अगले दिन दस बजे । हीराबाई तम्बू में अपने बालों को कंघी कर रही है । ९८८

बिरजू: अहं, अहं । बाई, ज़मींदार साहब । आइये, हुज़ूर । आइये, आइये । ९८९

ज़मींदार: नमस्ते हीराबाई । ९९०

हीराबाई: तशरीफ़ रखिये, ज़मींदार साहब । ९९१

oo ज़मींदार बैठते हुए "ऐ ... ह" ९९२

हीराबाई: मेरी ख़ुशक़िस्मती है कि आप आये । ९९३

ज़मींदार: ऐसा न कहो, हीराबाई । ख़ुशक़िस्मती तो मेरी है । ९९४

हीराबाई: नोश फ़रमाइये । ९९५

ज़मींदार: उहूं oo सिर हिलाता है oo ९९६

हीराबाई: जी ? ९९७

ज़मींदार: आदत से लाचार हूं हीराबाई । ९९८

हीराबाई: कैसी आदत ? ९९९

ज़मींदार: जब तक कि किसी नाज़नीन की नाज़ुक उंगलियां मेरे मुंह में पान की गिलौरी न डाल दें, मैं पान नहीं खाता । १०००

00 हीराबाई ज़मींदार के मुंह में पान डालती है । ज़मींदार उसका हाथ पकड़ लेते हैं । १००१

ज़मींदार: तुम्हारा हाथ तो बहुत नरम है, हीरा । १००२
00 हीराबाई अपना हाथ हटा लेती है 00
दिल भी ऐसा ही है क्या ? ख़ैर, तुम अपने दिल का भेद नहीं कहना चाहतीं, न कहो । लेकिन मैं अपने मन की बात सुनाए बिना आज यहां से नहीं जाऊंगा ।

मेला ख़त्म होने के बाद तुम कुछ दिन यहां और ठहर जाओ, १००३
ताकि जी भर के तुम्हें निहार सकूं । दिल खोल के तुमसे बातें कर सकूं । कजरी नदी के किनारे मेरा एक ऐशबाग़ है । मैं सच कहता हूं हीरा, मैं तुम्हें सर-आंखों पे रखूंगा ।
तो फिर बात पक्की समझूं ?

हीराबाई: मेला ख़त्म तो होने दीजिये । १००४

ज़मींदार: 00 गहरी सांस खींचकर 00 हैं, इतने दिनों के बाद १००५
आज मेरे जलते जिगर को राहत मिली । अच्छा, तो
फिर बात पक्की रही । है ?

00 00 00 00

00 गाड़ीवानों का पड़ाव । १००६

शिवरतन: अरे भई, हिरामन किधर है ? १००७

लालमोहर: हिरामन, वह रहा । १००८

शिवरतन: अरे भई हिरामन, मैं तुम्हीं को ढूंढ़ रहा था । मैं १००९
तुम्हारे लिए जलकर ख़ाक हो गया । तबाह हो गया ।

हिरामन: हैं ... आज दिन में ही पी रखी है क्या ? १०१०

शिवरतन: अरे भई, दिन क्या और रात क्या ? सब बराबर हो गये । १०११
बस अब तुम्हीं बचा सकते हो ।

हिरामन: मैं ? १०१२

शिवरतन: हां यार, तुम । मैं बिल्लू को भी पकड़ा था । पर उस १०१३
साले को भी ज़मींदार ने ख़रीद लिया है । मुझे फटकने ही नहीं देता । यार, लोग कहते हैं कि हीराबाई तुमको बहुत मानती है । मैं एक हज़ार रुपया दूंगा । ज़रूरत पड़े

तो दो हज़ार भी । एक मरतबा मुलाक़ात करा दो ।

०० हिरामन शिवरतन को मारता है । बाक़ी गाड़ीवान उसे बचाते हैं । मारपीट का शोर । १०१४

०० हीराबाई का तम्बू । हीराबाई खाट पर लेटे कोई पार्ट पढ़ रही है । १०१५

नौकर: अरे इस वक़्त तू यहां कहां ? १०१६

हिरामन: मुझे हीराबाई से मिलना है । १०१७

हीराबाई: कौन ? हिरामन ? अन्दर आओ, मीता । क्या बात है ? बैठो, बैठो न । बताओ क्या बात है । १०१८

हिरामन: कुछ नहीं । अ ... १०१९

हीराबाई: बैठो । १०२०

हिरामन: आप यह काम छोड़ दीजिये । यह नौटंकी का काम । १०२१

हीराबाई: क्यूं ? क्या हुआ ? तुम्हें नौटंकी अच्छी नहीं लगती ? १०२२

हिरामन: मेरी बात नहीं है । लोग आपको बुरा समझते हैं । १०२३

हीराबाई: तो क्या हुआ ? मैं बुरी बन तो नहीं गई । १०२४

हिरामन: फिर भी लोग तरह तरह की बातें करते हैं । १०२५

हीराबाई: नासमझ न बनो, हिरामन । मैंने तुम्हें उस दिन बताया था न । नौटंकी में काम नहीं करूंगी तो खाऊंगी क्या ? १०२६

हिरामन: क्यों ? आप सरकस कम्पनी में काम कीजिये । अजी, वहां आपको कोई बुरा नहीं कहेगा । वहां बाघ को नचाइयेगा । १०२७

हीराबाई: क्या ? बाघ ? १०२८

हिरामन: जी हां, बाघ के पास आने की हिम्मत किस को होगी? १०२९

हीराबाई: मैं बाघ नचाऊंगी ? १०३०

हिरामन: जी । १०३१

हीराबाई: मुझे बाघ खा जाएगा, हिरामन । ओह । ०० हंसती है ०० गुस्सा मत करो, हिरामन । यह बात नामुमकिन है । तुम समझते क्यों नहीं ? नशा जो हो गया । १०३२

हिरामन: नशा ? १०३३

हीराबाई: हां मीता, जैसे तुम्हें बैलगाड़ी चलाने का नशा है, वैसे ही मुझे लैला और गुलबदन करने का नशा है । देश देश घूमना, १०३४

सजधज की रोशनी में नाचना, गाना। जीने के लिए
सिवा इस नशे के और है ही क्या मेरे पास? बोलो।

हिरामन: अब क्या बोलूं ? १०३५

हीराबाई: चलो, कुछ मत बोलो। चलो कहीं घूम आएं। चलो न। १०३६

oo दोनों तम्बू के बाहर जा रहे हैं। नजमा उनकी ओर आती है। १०३७

नजमा: आपा, कहां जा रही हो? १०३८

हीराबाई: बाहर। १०३९

नजमा: कहां? १०४०

हीराबाई: मंदिर। १०४१

oo दोनों आगे चले जाते हैं। १०४२

हीराबाई: क्यों? क्या बात है, मीता? १०४३

हिरामन: मंदिर जाने को कह रही थीं लेकिन पास में कोई मंदिर
है ही नहीं। १०४४

हीराबाई: वह तो ऐसे ही कह दिया था। कहीं भी ले चलो, मीता। १०४५

हिरामन: हंस। १०४६

oo oo oo oo

oo संगीत। हिरामन और हीराबाई मेले से दूर किसी वन में है। बैलगाड़ी पास है। हिरामन हंसता है। १०४७

हीराबाई: तुम क्यों हंस रहे हो? १०४८

oo हिरामन हंसता ही रहता है। १०४९

हीराबाई: अरे, क्या हुआ? क्यों हंस रहे हो? १०५०

हिरामन: सुनिएगा तो आप भी हंसिएगा। १०५१

हीराबाई: ज़रूर हंसूंगी। तो क्या तुम अकेले हंसोगे? १०५२

हिरामन: उस दिन की बात याद आ गई, जिस दिन आप
टेसन से हमारी गाड़ी में बैठी थीं। १०५३

हीराबाई: तो इसमें हंसने की कौन - सी बात है? १०५४

हिरामन: कहते सरम लगती है। १०५५

हीराबाई: शरमाने से नहीं चलेगा। बताओ जल्दी। १०५६

हिरामन: क्या बताऊँ ? आपको नहीं मालूम हमको कितना डर लगा था जी । १०५७

हीराबाई: क्यों डर लगा था? १०५८

हिरामन: अरे सोचा कि कोई डाकिन पिसाचिन तो नहीं गाड़ी में बैठ गई । १०५९

हीराबाई: हा ... मैं इतनी बुरी लगती हूं? १०६०

हिरामन: नहीं, नहीं । मेरा यह मतलब नहीं । आप ग़लत समझी हैं । अरे, डाकिन पिसाचिन तरह तरह के रूप धर लेती हैं न । सो । १०६१

हीराबाई: अच्छा, फिर क्या हुआ? १०६२

हिरामन: फिर क्या? मंदिर में जाकर हाथ जोड़ा । कहा भगवान सही सलामत मेला पहुंच जाएं । कहीं यह डाकिन पिसाचिन हमारा नुक़सान न कर दे । १०६३

हीराबाई: कुछ नुक़सान हुआ? १०६४

हिरामन: ह्स्स । १०६५

हीराबाई: फिर क्या हुआ? १०६६

हिरामन: फिर? फिर जब मैं बैल को मारने लगा तो आपने कहा "आ हा, मारो मत" । ऐसी आवाज़ मैंने कभी नहीं सुनी । बच्चों जैसी महीन, फेनू - गिलासी बोली । १०६७

हीराबाई: फेनू - गिलासी? १०६८

हिरामन: जी, फेनू । फेनू - गिलासी । १०६९

हीराबाई: ओह । ग्रामफ़ोन । १०७०

हिरामन: हां, हां, वह ही भौंपू । १०७१

हीराबाई: फिर? १०७२

हिरामन: फिर क्या । जब हमने आपको देखा ... अरे, बाप रे, यह तो परी है, परी । १०७३

हीराबाई: परी? तुमने मेरे पर देखे क्या? १०७४

हिरामन: ह्स्स । आप तो मज़ाक़ करती हैं । १०७५

हीराबाई: अच्छा मीता, एक बात तो बताओ । उस दिन तो मैं परी लग रही थी और आज क्या लग रही हूं? १०७६

हिरामन: जी ... आज ... आप ... १०७७

हीराबाई: ०० हंसती है ०० चलो कहीं और चलें । १०७८

०० दोनों बैलगाड़ी की ओर जाते हैं । हीराबाई आगे गाड़ीवान की जगह पर बैठती है । संगीत । १०७९

हीराबाई: आ ह ०० बैठती है ०० १०८०

हिरामन: अरे आप इधर कहां बैठ रही हैं? १०८१

हीराबाई: गाड़ी हम चलाएंगे । १०८२

हिरामन: हैं ? ह ... ह ... मज़ाक़ करने का बहुत आदत है आपको । हटिये उधर को बैठिये । गाड़ी चलाना औरत लोग का काम नहीं है । १०८३

हीराबाई: फिर औरतों का क्या काम है ? १०८४

हिरामन: अजी औरतों का क्या काम ? घर - गिरस्ती, शादी, बहू बनना । और क्या ? १०८५

हीराबाई: बहू . . . १०८६

हिरामन: अ ... आप मंदिर जाने को कह रही थीं न? जब इत्ती दूर आये, यहां पास ही में मंदिर है । चलिये मंदिर चलते हैं । १०८७

हीराबाई: मंदिर जाकर क्या होगा ? मंदिर तो सब जगह है, यहां ... वहां । मंदिर में जाकर क्या करेंगे मीता ? १०८८

हिरामन: ह ... ह ... भगवान जी से प्रार्थना करेंगे । जो मन में है सो उनसे मांगेंगे । १०८९

हीराबाई: मन में जो है सब मिल जाएगा ? १०९०

हिरामन: जी ... १०९१

हीराबाई: तुम भी कुछ मांगोगे ? १०९२

हिरामन: ज़रूर मांगेंगे । १०९३

हीराबाई: क्या मांगोगे मीता ? १०९४

हिरामन: अ ... सो तो भगवान जी से ही मांगेंगे । चलिए । हैं ? हैं ... १०९५

हीराबाई: चलो । १०९६

०० बैलगाड़ी किसी गांव से होकर जाती है । १०९७

हिरामन: अरे ज़रा हट जाओ । हट जाओ, रास्ता छोड़ो । १०९८

०० बच्चे गाड़ी के पीछे दौड़ते हैं । १०९९

बच्चों का गाना: लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया
पिया की पियारी भोली भाली रे दुलहनिया
लाली लाली डोलिया में लाली रे दलहनिया
मीठे बैन तीखे नैनोंवाली रे दलहनिया
लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया
पिया की पियारी भोली भाली रे दुलहनिया

लौटेगी जो गोदी भर हमें न भुलाना
लड्डू पेड़े लाना अपने हाथों से खिलाना
लौटेगी जो गोदी भर हमें न भुलाना
लड्डू पेड़े लाना अपने हाथों से खिलाना
तेरी सब रातें हों दीवाली रे दुलहनिया

लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया
पिया की पियारी भोली भाली रे दुलहनिया
लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया
पिया की पियारी भोली भाली रे दुलहनिया

दूल्हे राजा रखना जतन से दुलहन को
कमी न दुखाना तू गोरिया के मन को
दूल्हे राजा रखना जतन से दुलहन को
कमी न दुखाना तू गोरिया के मन को
नाज़ुक है नाज़ों की है पाली रे दुलहनिया

लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया
पिया की पियारी भोली भाली रे दुलहनिया

लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया
पिया की पियारी भोली भाली रे दुलहनिया
लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया
पिया की पियारी भोली भाली रे दुलहनिया
लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया

oo बैलगाड़ी वापस मेले आ जाती है ।

हीराबाई: मीता, आज से नया नाटक है । जल्दी आ जाना ।

हिरामन: हूस ।

oo पीछे से गाने की ध्वनि आती है:

लाली लाली डोलिया में लाली रे दुलहनिया
पिया की पियारी भोली भाली रे दुलहनिया

oo हीराबाई उतर जाती है । हिरामन देखता है कि हीराबाई की शाल गाड़ी में छूट गई है । बहुत हिफ़ाज़त से शाल को लेकर हीराबाई के तम्बू में आता है ।

हीराबाई: हिरामन, आओ । बैठो ।

हिरामन: अ ... अ ... यह आपकी शाल ।

हीराबाई: बैठो ।

हिरामन: गाड़ी ... ११११३

हीराबाई: बैठो न। ११११४

बिरजू: बाई, ज़मींदार साहब। ११११५

हीराबाई: आइये ज़मींदार साहब, क्या हाल हैं? ११११६

oo ज़मींदार साहब अन्दर आते हैं। ११११७

ज़मींदार: अरे हाल क्या पूछती हो, हीराबाई। उम्र दराज़ मांग के लाए थे चार दिन, दो आरज़ू में कट गये दो इन्तज़ार में। ११११८

हीराबाई: अच्छा हिरामन, अब तुम जाओ। रात को खेल देखने आना। ११११९

हिरामन: ह ... आं ... ११२२०

oo हिरामन तम्बू के बाहर आता है। वह रुकना चाहता है लेकिन बिरजू उसे सावधान करता है। ११२२१

बिरजू: जाओ, जाओ न यार। काहे चिपके पड़े हो? रहना फटेपड़े में और ख़्वाब देखना महलों के। चलो, फूटो अपना ठेला हांको। चलो। ११२२२

बिरजू: oo स्वयं से oo चले आते हैं कहीं से। ११२२३

oo हिरामन ग़ुस्से में चला जाता है। बैलगाड़ी पर सवार होकर बैलों को ज़ोर से चाबुक मारकर हांकता है। ११२२४

oo oo oo oo

oo हीराबाई के तम्बू में। ११२२५

ज़मींदार: क्या बात है हीरा, तबियत ख़राब है क्या? ११२२६

हीराबाई: जी नहीं, बिल्कुल ठीक है। मगर इस वक़्त आप मुझे अकेला छोड़ दें तो बड़ी मेहरबानी होगी। ११२२७

ज़मींदार: समझा। मोल - तोल करके क़ीमत बढ़ा रही हो। मैं मुंहमांगे दाम दूंगा। ११२२८

हीराबाई: आप मेहरबानी करके यहां से चले जाइये। मैं आपके हाथ जोड़ती हूं। ११२२९

ज़मींदार: लेकिन ... लेकिन सुबह जो तुमने वायदा किया था, सो ... ११२३०

हीराबाई: मैंने कोई वायदा नहीं किया था, ज़मींदार साहब। ११२३१

ज़मींदार: इन कुछ घंटों में तुम्हारे मन में ऐसा क्या हो गया है जो इस तरह ... ११२३२

हीराबाई: मन की बात आप क्या समझेंगे, ज़मींदार साहब । ११३३
आप तो सिर्फ़ रूप और जवानी के गाहक हैं ।

ज़मींदार: हां, हां क्यों नहीं, क्यों नहीं । आजकल सुना है ११३४
तुम्हारे मन की बात सिर्फ़ बैलगाड़ी के गाड़ीवान ही
समझ सकते हैं । हूं ?

हीराबाई: कहां ज़मींदार साहब । आप ही की तरह वे भी मुझे ११३५
ग़लत समझते हैं । आपकी निगाहों में मैं सिर्फ़ बाज़ारू
औरत हूं और उनकी निगाहों में देवी । लेकिन ज़मींदार
साहब, उनकी ग़लतफ़हमी में जो एक नशा है, वह न
आपके ऐशबाग़ में है और न विलायती शराब में ।

ज़मींदार: अच्छा तो आजकल तुम पर सती - सावित्री बनने का नशा ११३६
सवार है । मगर सती - सावित्रियां बनाने से नहीं बनतीं,
हीराबाई ।

हीराबाई: क्यों नहीं बन सकतीं ? अगर आप जैसे क़द्रदान सती - ११३७
सावित्रियों को बाज़ारू औरत बना सकते हैं तो ऐसे भी लोग
दुनिया में कुछ तो हैं जो बाज़ारू औरतों को शरीफ़ औरत
बना सकते हैं ।

ज़मींदार: हं ... हं ... छोड़ो भी ये बड़ी बड़ी बातें । ११३८

हीराबाई: oo क्रोध में । बिरजू को आवाज़ देती है oo बिरजू । ११३९

ज़मींदार: अच्छा तो यह बात है । लेकिन याद रखना । तुम ११४०
जैसी सस्ती और छिछोरी लौंडियों के दिमाग़ दुरुस्त
करने के सभी तरीक़े मालूम हैं मुझे ।

बिरजू: ओह ... हुज़ूर ... ओह ... ११४१

ज़मींदार: हट जा, बेईमान । oo ज़मींदार साहब बाहर ११४२
निकल जाते हैं oo

बिरजू: यह क्या कर दिया हीराबाई तुमने ? इतने बड़े ज़मींदार ११४३
को ? अरे, ये तो यहां के मालिक हैं ।

हीराबाई: चले जाओ, चले जाओ । सब यहां से चले जाओ । ११४४
oo वह रोती है oo

oo तम्बू के बाहर लहसनवा कान लगाए सब कुछ सुन रहा है । ११४५

मैनेजर: अबे चोटी के, क्या सुन रहा था तू ? ११४६

लहसनवा: कुछ नहीं, मालिक । ११४७

मैनेजर: जा हट । ११५८

बिरजू: मैनेजर साहब । ११५९

मैनेजर: अरे अपने आपको समझती क्या है ? इतने बड़े ज़मींदार ११६०

की बेइज़्ज़ती करने का नतीजा क्या होगा , मालूम है ?

बिरजू: लेकिन आप बेकार माथापच्ची क्यों कर रहे हैं ? आप ११६१
तो जानते हैं हीराबाई के स्वभाव को । थोड़ा - सा
बचपन है , ठीक हो जाएगी ।

मैनेजर: अरे नखरे दिखाए स्टेज पे । मैंने ऐसी सैकड़ों लड़कियां ११६२
देखी हैं । यह मेरा काम चौपट करना चाहती है ?

बिरजू: लेकिन मैनेजर साहब , सुनिये तो सही । ११६३

मैनेजर: अरे हट । ११६४

बिरजू: मैनेजर साहब, आप क्यों बेकार परेशान हो रहे हैं? ११६५
ज़रा तो सोचिये, अगर आज हीराबाई कम्पनी छोड़कर
चली गई तो रात के खेला का क्या होगा?

मैनेजर: पर उस ज़मींदार के बच्चे का क्या होगा? ११६६

बिरजू: वह तो एक बोतल में ठंडा हो जाएगा । लेकिन रात को ११६७
पब्लिक का ग़ुस्सा सिर्फ़ हीराबाई ही ठंडा कर सकती है ।
आप तो जानते हैं न, हज़ारों के टिकट उसके नाम पे बिकते
हैं । अगर रात को हीराबाई स्टेज पर नहीं होगी ना,तो
पब्लिक लाठी लेकर के स्टेज पर आ जाएगी । मैनेजर साहब,
ज़रा तो सोचिये, ज़रा समझिये न । ज़रा समझिये न,
मैनेजर साहब ।

00 00 00 00

00 हिरामन अपने गांव को लौट आया है । उसकी भतीजी ११६८
दौड़कर उसके पास जाती है ।

शान्ता: हमारे लिए मेले से क्या लाए , काका ? ११६९

हिरामन: कुछ नहीं लाया । जा , मग़ज़ मत खा । ११७०

00 हिरामन घर के अन्दर खाट पर लेट जाता है । ११७१

शान्ता: 00 मां से 00 माई ओ माई, काका आये हैं । ११७२

भौजी: तेरा जी तो अच्छा है न? ११७३

हिरामन: हूं । ११७४

भौजी: अच्छा हुआ तू आ गया, हिरामन । परसों रुपये भरने ११७५
हैं । कितने रुपये होंगे तेरे पास?

हिरामन: 00 सांसता है 00 होंगे सौ एक । ११७६

भौजी: तो ला दे । तेरे भैय्या तो बड़े परेसान थे । ११७७

हिरामन: लेकिन मेरे पास नहीं हैं, भऊजी । किसी के पास रख ११७८
आया हूं ।

भौजी: किसी के पास रख आया है। अगर वह खा उड़ा दे तो? ११७९

हिरामन: भरोसा था, सो रख आया। मेले में बहुत पाकेट कट ११८०
रहे थे इस बार। अगले खेप में ले आऊंगा।

भौजी: भूलेगा तो नहीं? ११८१

हिरामन: नहीं भूलेगा, भऊजी। अब ज़रा सोने दे मुझे। थक ११८२
गया हूं बहुत।

भौजी: अच्छा, सो जा। ११८३

00 00 00 00

00 ज़मींदार साहब अपने मकान में। एक कोने में बिरजू खड़ा है। ११८४

ज़मींदार: तुमने तो कहा था वह हमें सर आंखों पर बिठाएगी। ११८५
हमारी मुलाक़ात को अपना सौभाग्य समझेगी। लेकिन
उसने हमारी बेइज़्ज़ती कर दी।

बिरजू: अजी आपभी कमाल करते हैं, हुज़ूर। हीराबाई की क्या ११८६
मजाल जो आप जैसे ज़मींदार की बेइज़्ज़ती कर दे।

ज़मींदार: तो फिर उस नाटक की क्या ज़रूरत थी? ११८७

बिरजू: यही तो रोना है, सरकार। नाटक में काम करते करते ११८८

हीराबाई खुद एक नाटक हो गई। देखिये न, कभी तो
वह नाटक को सच समझकर पागलों की तरह से बातें करने
लगती है और कभी सच को नाटक समझकर आप जैसे
ज़मींदार को तम्बू से बाहर निकाल देती है।

ज़मींदार: तो अब उसे यह समझाना पड़ेगा कि नाटक क्या है ११८९
और सच क्या है।

बिरजू: नहीं, सिर्फ़ उसे इतना समझा दीजिये कि वह है ११९०
हीराबाई और आप हैं ज़मींदार विक्रमसिंह।

ज़मींदार: क्या? तो यह भूल गई है? ११९१

बिरजू: भूलना चाहती है, सरकार। ११९२

ज़मींदार: हूं। तो हम समझा देंगे। शिकारी का निशाना एक बार ११९३
चूक सकता है, बार बार नहीं।

00 00 00 00

00 नौटंकी की स्टेज पर हीराबाई। ११९४

गाना: रहेगा इश्क़ तेरा ख़ाक में मिला के मुझे ११९५
हुए हैं मैं रंज इन्तिहा के मुझे
आ आ आ ...
आ.. आ भी जा रात ढलने लगी

चांद छुपने चला आ भी जा
रात ढलने लगी हो अ चांद छुपने चला हो अ आ॰ आ
भी जा

तेरी याद में बेख़बर शमा की तरह रात भर ११९६
तेरी याद में बेख़बर शमा की तरह रात भर
जली आरज़ू दिल जला आ भी जा
रात ढलने लगी चांद छुपने चला आ ॰ आ भी जा
रात ढलने लगी चांद छुपने चला हो आ ॰ आ भी जा

उफ़क़ कर खड़ी है सहर, अंधेरा है दिल में इधर ११९७
उफ़क़ कर खड़ी है सहर हो अंधेरा है दिल में इधर
वहीं रोज़ का सिलसिला आ ॰ आ भी जा
रात ढलने लगी चांद छुपने चला आ ॰ आ भी जा
रात ढलने लगी हो अ चांद छुपने चला हो अ आ ॰ आ भी
जा

00 दर्शकों की तालियां । ११९८

00 हीराबाई अपने तम्बू में आती है । ११९९

हीराबाई: अरे, बत्ती कैसे बुझ गई ? १२००

ज़मींदार: हमने बुझ दी । हं ...हं 00 हंसता है 00 सोचा १२०१
उजाले में तो तुमने हमें पहचाना नहीं, अंधेरे में ही
मुलाक़ात कर लेते ।

हीराबाई: आप यहां बैठकर नशा कर रहे हैं ? १२०२

ज़मींदार: 00 उसके हाथ में शराब की गिलास है 00 १२०३
अरे कहां होता है नशा । जब से तुम्हें देखा है, इस
शराब में तो नशा रहा ही नहीं । अब तो तय कर लिया
है, वही शराब पियूंगा, जिसका नाम है हीरा ।

हीराबाई: आप चले जाइये यहां से । १२०४

ज़मींदार: और अगर न जाऊं तो ? १२०५

हीराबाई: 00 ज़ोर से 00 निकल जाइये यहां से । १२०६

ज़मींदार: देखो हीरा, अगर अब भी तुमने इन्कार किया तो मैं १२०७
इक़रार का इन्तज़ार न कर सकूंगा ।

हीराबाई: ज़मींदार साहब, आप जो चाहते हैं, वह कमी नहीं होगा । १२०८
मेहरबानी करके यहां से चले जाइये ।

ज़मींदार: हं ... हं ... मेहरबानी करने क़ाबिल रखा ही कहां है १२०९
तुमने? दो टके की छोकरी, एक मामूली गाड़ीवान के
लिए तू ठाकुर विक्रमसिंह की बेइज़्ज़ती कर रही है ।
00 ज़मींदार हीराबाई को ज़ोर से पकड़ता
है 00 याद रख, अगर तू मुझे नहीं मिली तो
हिरामन की लाश भी किसी को नहीं मिलेगी ।

हीराबाई: oo चीखती है oo बिरजू, नजमा, पिताजी । १२१०

ज़मींदार: कोई नहीं आएगा । अब तुम्हें बचाने कोई नहीं आएगा । १२११

हीराबाई: oo रोती है oo छोड़ दो, मैं कहती हूं, छोड़ दो मुझे, कमीने, छोड़ ... शैतान ... छोड़, छोड़ । १२१२

ज़मींदार: मुझे क्या समझ रखा है । हैं? मुझे क्या समझ रखा है? १२१३

हीराबाई: छोड़ । १२१४

oo ज़मींदार हीराबाई को खाट पर धकेलना चाहता है । हीराबाई किसी तरह अपने को छुड़ाकर तम्बू के बाहर भाग जाती है । १२१५

oo oo oo oo

oo मेले का दूसरा भाग । नौटंकी कम्पनी के लोग तम्बू में इकट्ठे हुए हैं । १२१६

उस्ताद: नौटंकी छोड़ दोगी तो करोगी क्या? धन्धे से मन हटाकर कहीं और लगाओगी तो पेट कैसे भरोगी, बेटी? १२१७

हीराबाई: ज़िन्दगी में पेट ही तो सब कुछ नहीं होता । १२१८

नजमा: अगर पेट सब कुछ नहीं होता तो प्यार भी सब कुछ नहीं होता । और फिर उस भोले भाले गाड़ीवान के साथ तुम्हारे यह मन का खेल अभी तो पर्दे के भीतर है, जब परदा उठेगा तब क्या होगा? १२१९

हीराबाई: क्या होगा? १२२०

उस्ताद: उसका सपना टूट जाएगा । १२२१

हीराबाई: नहीं नहीं यह कभी नहीं होगा । मैं उसका सपना कभी नहीं टूटने दूंगी । १२२२

बिरजू: अगर ऐसा चाहती हो तो अपने तमाशबीनों को मायूस न करो । कहीं ऐसा न हो कि हीरादेवी को कोई चाहनेवाला न हो, और हीराबाई को कोई देखनेवाला न हो । १२२३

नजमा: ऐसा भी तो हो सकता है । फिरमन हीराबाई को ही अगर देखे १२२४

मैनेजर: क्या बात करती हो नजमाबाई । जिसके मन में देवी हो उसके घर में बाई कैसे बस सकती है? १२२५

उस्ताद: अगर उसका भरम तोड़ दोगी तो वह बरबाद हो जाएगा । नौटंकी छोड़ दोगी तो तुम खुद बरबाद हो जाओगी । १२२६

हीराबाई: मेरी कुछ समझ में नहीं आता मैं क्या करूं । १२२७

नजमा: बिना कुछ कहे मुंह मोड़ लो । बेवफ़ा समझकर माफ़ कर देगा । १२२८

बिरजू: और फिर कौन जाने ज़मींदार का ग़ुस्सा क्या रंग लाता है । १२२९

मैनेजर: उसके ग़ुस्से का क्या भरोसा । मुझे तो उस गाड़ीवान की जान ख़तरे में नज़र आती है । १२३०

बिरजू: बेचारे की जान जाएगी, हमारा धंधा जाएगा, और तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा । १२३१

०० हीराबाई सोच में पड़ जाती है । १२३२

०० हिरामन वन के बीच गाड़ी हांक रहा है । दूसरी तरफ़ से पलटा की गाड़ी आती है । १२३३

पलटा: हिरामन भाई । अरे भाई रोको, रोको । हं ... हं .. अरे ... अरे कैसे हो रे ? १२३४

हिरामन: क्यों? १२३५

पलटा: अरे कल कम्पनी में बड़ा तूफ़ान खड़ा हो गया । अहा ... १२३६

हा ... हा ... साक्षात सिया सुकुमारी है ।

हिरामन: अरे हुआ क्या? १२३७

पलटा: अरे वह अपना लटपटिया ज़मींदार । न जाने उस साले का क्या नाम है । साला पूरा रावण है । १२३८

हिरामन: अरे, क्या बकता है । ठीक ठीक से बताओ । १२३९

पलटा: अरे, वही तो कह रहा हूं । वह रावण हीराबाई के तम्बू में घुस गया । फिर क्या? सिया सुकुमारी अपने प्रचंड रूप में आ गई । ज़मींदार को बोली, निकलो बाहिर । उसके बाद बिरजू आया उसको भी बोली, निकलो बाहिर । फिर उसके बाद मैनेजर आया, उसको बोली, निकलो बाहर । १२४०

हिरामन: अरे, पर यह सब तुमको कैसे मालूम हुआ? १२४१

पलटा : अरे, वह अपना लहसनवा है ना, वही तो सब ख़बर देता है । १२४२

हिरामन: ०० ख़ुश होकर बैलों को हांकता है ०० हैं ... हैं ... १२४३

पलटा: ए हिरामन, अरे सुन तो । १२४४

हिरामन: अरे वहीं जा के सुन लेंगे । १२४५

00 हीराबाई के तम्बू में । हीराबाई सिसकियां भर रही है । १२४६

नजमा: यह सब क्या हो रहा है, आपा? १२४७

हीराबाई: जो नहीं होना चाहिये । भूल मेरी थी जो ख़ुद को भूल बैठी । पर क्या करूं? उसके भोलेपन और सादगी की एक एक बात मुझे याद आती है । रास्ते में किसी भी मुसाफ़िर को देखकर वह परदा ऐसे गिरा देता था जैसे मुझे किसी ने देख लिया तो नज़र लग जाएगी । १२४८

आठ आने का टिकट लेकर जिसका नाच कोई भी देख सकता है, उसे वह सारी दुनिया से छुपाकर ले आया । महुआ के घाट पर नहाने गई तो कहने लगा, यहां मत नहाइये, यहां कुआंरी लड़कियां नहीं नहातीं । और उस दिन जब किसी तमाशबीन ने बुरी बात कह दी तो मारने मरने को तैयार हो गया । १२४९

ऐसे भोले भाले इन्सान के साथ । नहीं, नजमा, स्टेज पर घंटा दो घंटा नाटक करना आसान है, लेकिन ज़िन्दगी - भर सती - सावित्री का नाटक मुझसे नहीं होगा । लैला का पार्ट करनेवाली लैला बनने चली थी । हूं? है ना अनहोनी बात । १२५०

नजमा: ऐसा क्यों सोचती हो, आपा? एक बार उससे साफ़ साफ़ कहकर तो देखो । १२५१

हीराबाई: नहीं नजमा, जब कहना चाहिये था, तब ख़ामोश रहकर एक ग़लती की । अब जब ख़ामोश रहना चाहिये, तब कुछ कहकर मैं दूसरी ग़लती नहीं करूंगी । १२५२

नजमा: मगर यह तो सोचो, तुम्हारे शहर की नौटंकी ने अगर तुम्हें वापस न लिया तो क्या होगा? १२५३

हीराबाई: क्या होगा? लाखों की भीड़ में एक और हीराबाई कहीं खो जाएगी । मगर हिरामन के सपने की हीरादेवी तो बनी रहेगी उसके पास । मेरा चाहे जो भी हो, मैं उसका सपना टूटने नहीं दूंगी । १२५४

नजमा: लेकिन तुम उससे मिले बिना चली गईं तो उसे पता भी नहीं चलेगा कि तुमने उसके लिए कितनी बड़ी क़ुर्बानी की । १२५५

हीराबाई: मैं उससे मिले बग़ैर कैसे जा सकूंगी? अगर वह मिला तो उसे यह सब कैसे बताऊंगी? और क़ुर्बानी? मेरे पास है ही क्या उसके क़ाबिल ? १२५६

लहसनवा: 00 तम्बू के अन्दर आता है 00 मालकिन, हिरामन मालिक अभी तक गांव से नहीं लौटे । १२५७

हीराबाई: लालमोहर वग़ैरह को ख़बर कर दी ना ? १२५८

लहसनवा: जी हां । अगर हिरामन मालिक पूछेंगे तो क्या कहूंगा ? १२५९

हीराबाई: कह देना नौटंकी की बाई थी । पार्ट ख़त्म हो गया, १२६०
जा रही है । मगर मिल ज़रूर ले एक बार । जा ।

०० लहसनवा बाहर जाता है । १२६१

हीराबाई: दोष मेरा नहीं, नाटक लिखनेवाले का है । उसने जितना १२६२
मेरा पार्ट लिखा था, निभा दिया । अब नाटक ख़त्म ही
नहीं हुआ तो मैं क्या करूं? ०० वह रोती है ००

०० ०० ०० ००

०० मेले का दृश्य । हिरामन बैलगाड़ी से उतरकर हीराबाई १२६३
के तम्बू की ओर जाता है । रास्ते में लालमोहर से
भेंट होती है ।

लालमोहर: अरे कहां थे तुम हिरामन? मैं तुम्हें कब से ढूंढ़ रहा हूं । १२६४
तुम्हें बुलाया है स्टेशन पर । वह आज चली जा रही हैं ।

हिरामन: कौन जा रही है? कहां? १२६५

लालमोहर: अरे हीराबाई । और कौन? १२६६

हिरामन: हीराबाई? १२६७

लालमोहर: तुम्हें सुबह से पूछ रही थी । १२६८

हिरामन: हीराबाई जा रही है? कौन - सी गाड़ी से? १२६९

लालमोहर: अभी जो जाएगी । शायद ... शायद वह चली भी गई हो । १२७०

०० हिरामन भागकर बैलगाड़ी पर सवार होता है और उसे १२७१
स्टेशन की ओर दौड़ाता है ।

लालमोहर: ०० पीछे से ०० हिरामन । हिरामन । १२७२

०० ०० ०० ००

०० दूर से ट्रेन आती दिखाई दे रही है । हीराबाई प्लेटफ़ार्म १२७३
पर अपने बक्से पर बैठी हुई है ।

बिरजू: बाई, सिगनल डोन हो गया । मैंने कहा, सिगनल डोन १२७४
हो गया ।

हीराबाई: हूं ? १२७५

बिरजू: क्या सोच रही हैं आप? १२७६

हीराबाई: सोच रही हूं, इस गाड़ी से न जाएं । तबीयत ठीक नहीं १२७७
है ।

बिरजू: लेकिन कल इसी वक़्त पर गाड़ी मिलेगी । १२७८

हीराबाई: तो क्या हुआ, एक दिन मुसाफ़िरख़ाने में रह जाऊंगी । १२७९

बिरजू: हं ... हं ... एक बात पूछूं बाई? १२८०

हीराबाई: कुछ मत पूछो, बिरजू ।

०० उधर से ट्रेन आती है । तब तक हिरामन स्टेशन पहुंच जाता है । दौड़ते - दौड़ते पटरियों को पार करने के बाद हिरामन हीराबाई के पास पहुंचता है । १२८१

हीराबाई: तुम आ गये हिरामन । चलो भेंट हो गई । ये लो अपने रुपये । लो न मीता । ०० बटुआ हिरामन के आगे करती है ०० मैं तो उम्मीद ही खो बैठी थी । सोचा अब भेंट ही न होगी । मैं वापस जा रही हूं, अपने देस की कम्पनी में । १२८२

०० हिरामन के कंधे पर अपनी शाल डालते हुए ०० लो, मेरी निशानी । सर्दी में काम आएगी । हूं ... गुलाबगंज के मेले में मेरा तमाशा देखने आओगे न? १२८३

०० हिरामन अवाक खड़ा है । १२८४

हीराबाई: जी छोटा न करो हिरामन । तुमने कहा था न, महुआ को सौदागर ने ख़रीद लिया । १२८५

बिरजू: बाई, सामान लद गया । १२८६

हीराबाई: मैं बिक चुकी हूं, मीता । १२८७

बिरजू की आवाज़: बाई, जल्दी करो न, गाड़ी छूट जाएगी । चलो न । चलो । १२८८

बिरजू: ०० हिरामन से ०० अरे लाट - फ़ारम के बाहर निकल जाओ यार, कोई पकड़ लेगा । चलो यहां से । १२८९

०० ट्रेन की आवाज़ । डिब्बे की खिड़की से हीराबाई हिरामन की ओर देखती है । गाड़ी चलने लगती है । हिरामन खोया हुआ प्लैटफ़ार्म पर खड़ा रहता है । फिर वापस अपनी बैलगाड़ी को आता है । बैलों को मारने के लिए हाथ उठाता है । तभी उसे हीराबाई की आवाज़ सुनाई देती है "मारो मत" । हिरामन का हाथ रुक जाता है । १२९०

पीछे से आवाज़: प्रीत बना के तूने जीना सिखाया १२९१
हंसना सिखाया रोना सिखाया
जीवन के पथ पर मीत मिलाए
जीवन के पथ पर मीत मिलाए ।

हिरामन: ०० बैलों से ०० उलट - उलट के क्या देखते हो? १२९२
खाओ क़सम फिर कभी कम्पनी की बाई को गाड़ी में नहीं बैठाएंगे ।

०० बैलगाड़ी स्टेशन छोड़कर गांव की ओर जाती है । १२९३

पीछे से आवाज़: मीत मिला के तूने सपने जगाए
सपने जगा के तूने काहे को दे दी जुदाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई

१२९४

दुनिया बनानेवाले, क्या तेरे मन में समाई
काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई।

१२९५

oo oo oo oo

oo फ़िल्म समाप्त oo